हिन्दी दैनिक

लखनऊ जंक्शन

RNI NO.-UPHIN/2015/64743 Email-lkojunction@gmail.com

वर्ष: 11 अंक: 126 लखनऊ गुरुवार 25 दिसम्बर 2025 पृष्ठ: 04 मूल्य: 01 रूपये

यह नया उत्तर प्रदेश है, आज प्रदेश में न दंगे हैं, न अराजकता: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

अनुपूरक बजट पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समाजवादी पार्टी पर बोला बड़ा हमला

पूर्ववर्ती सरकारों की योजनाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ती रहीं, जेपीएनआईसी और गोमती रिवरफ्रंट इसके उदाहरण: मुख्यमंत्री

हमारी पूर्वांचल एक्सप्रेसवे जैसे प्रोजेक्ट कम लागत में और बेहतर गुणवत्ता के साथ पूरे किए: सीएम योगी

किसानों को बिजली, सुरक्षा और समय पर भुगतान की गारंटी दी गई, गन्ना किसानों को समय पर किया भुगतान: मुख्यमंत्री

पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम लागू किया, फॉरेंसिक लैब्स और साइबर थानों का विस्तार हुआ: योगी आदित्यनाथ

निवेशकों के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण है, कोई गुंडा किसी उद्योगपति या व्यापारी से रंगदारी मांगने की हिम्मत नहीं कर सकता: सीएम

यह वह उत्तर प्रदेश नहीं है जहां पुलिस भागती थी और अपराधी पीछा करते थे, आज अपराधी परिणाम जानता है: मुख्यमंत्री

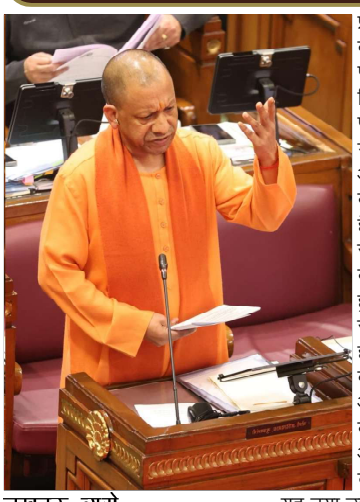

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन अनुपूरक बजट पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समाजवादी पार्टी पर जमकर हमला किया। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों की योजनाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ती रहीं, जेपीएनआईसी और गोमती रिवरफ्रंट इसके उदाहरण हैं। वहीं हमारी सरकार ने पूर्वांचल एक्सप्रेसवे जैसे प्रोजेक्ट कम लागत में, बेहतर गुणवत्ता के साथ पूरे किए। किसानों को बिजली, सुरक्षा और समय पर भुगतान की गारंटी दी गई। गन्ना किसानों को अब तक 2.92 लाख करोड़ का भुगतान किया जा चुका है। पुलिस व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया, पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम लागू हुआ, फॉरेंसिक लैब्स और साइबर थानों का विस्तार हुआ। महिला पीएसी बटालियन गठित की गईं और सेफ सिटी के लक्ष्य को प्राप्त किया गया। आज उत्तर प्रदेश में न दंगे हैं, न अराजकता। यह नया उत्तर प्रदेश है, जहां कानून का राज है, विकास की गति है और जनता का विश्वास है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रदेश में कानून का राज है। निवेशकों के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण है। कोई गुंडा किसी उद्योगपति या व्यापारी से रंगदारी मांगने की हिम्मत नहीं कर सकता। अगर कोई ऐसा करता है, तो उसे परिणामों का पूरा ज्ञान है। यह वह उत्तर प्रदेश नहीं है जहां पुलिस भागती थी और अपराधी पीछा करते थे। आज प्रदेश हर नागरिक को सुरक्षा की गारंटी है और अपराधियों को सख्त चेतावनी भी।

आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लाया गया अनुपूरक बजट मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सरकार की वेलफेयर योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग तक पहुंचा है। यही कारण है कि जब अनुपूरक बजट प्रस्तुत करने की आवश्यकता पड़ी, तो सरकार ने बिना किसी संकोच के निर्णय लिया। जब कोई नई योजना प्रारंभ करनी होती है या कोई ऐसा कार्य सामने आता है, जिसके लिए नियमित बजट में प्रावधान नहीं होता, तो सरकार को अनुपूरक बजट का सहारा लेना पड़ता है। सरकार ने उन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि फरवरी माह में प्रस्तुत मूल बजट वर्ष 2025–26 के लिए ६८ लाख 8 हजार 736 करोड़ का था। इसके अतिरिक्त सरकार ने 24,496. 98 करोड़ का अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया है। यह राशि उन क्षेत्रों के लिए रखी गई है, जिनमें नियमित बजट में पर्याप्त प्रावधान नहीं था, जैसे एक्सप्रेसवे परियोजनाएं, ऊर्जा, स्वास्थ्य, नगरीय सुविधाएं, तकनीकी शिक्षा और महिला सशक्तिकरण। इन दोनों को मिलाकर वर्ष 2025–26 का कुल बजट 8,33,233.04 करोड़ का हो जाता है। उत्तर प्रदेश आज निवेशकों के लिए ड्रीम डेस्टिनेशन मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें परिणामों पर ध्यान देना होगा और परिणाम क्या हैं, यह आज सबके सामने है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था आज निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन चुकी है। देश–विदेश में यूपी के प्रति सकारात्मक धारणा बनी है। इसके पीछे डबल इंजन सरकार की स्पष्ट नीति, तेज निर्णय और प्रभावी क्रियान्वयन है। जहां पहले पॉलिसी पैरालिसिस के कारण उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य कहा जाता था, वहीं आज स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। आज प्रदेश के पास 35 सेक्टोरल पॉलिसीज़ हैं। यहां 'पिक एंड चूज़' नहीं, बल्कि स्पष्ट नियम और पारदर्शी व्यवस्था है। परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश निवेश के लिए देश का ड्रीम डेस्टिनेशन बन चुका है। पिछले पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से निकलकर रेवेन्यू सरप्लस स्टेट के रूप में स्थापित हुआ है। आज देश के कई राज्यों की आर्थिक स्थिति यूपी जितनी मजबूत नहीं है। यह सब साफ नीयत, स्पष्ट नीति और मजबूत इच्छाशक्ति का परिणाम है। हमें इस बात पर गर्व है कि हमने उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य के कलंक से मुक्त किया है। आज यूपी में फियरलेस बिजनेस की संस्कृति विकसित हुई मुख्यमंत्री ने बताया कि वित्तीय अनुशासन और विकास के बीच सरकार ने बेहतरीन संतुलन बनाया है। रेवेन्यू सरप्लस होना वित्तीय अनुशासन का प्रमाण है और वेलफेयर स्टेट के रूप में यूपी की पहचान इसका दूसरा पक्ष है। अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति

का परिणाम यह है कि आज यूपी में फियरलेस बिजनेस, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ट्रस्ट इन गवर्नेंस की संस्कृति विकसित हुई है। उन्होंने कहा कि आजादी के समय देश की अर्थव्यवस्था में यूपी की हिस्सेदारी लगभग 14 प्रतिशत थी, लेकिन कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की नीतियों ने इसे घटाकर 8 प्रतिशत से भी कम कर दिया। पिछले साढ़े आठ वर्षों में सरकार के प्रयासों से यूपी की हिस्सेदारी फिर बढ़कर 9.5 से 10 प्रतिशत के करीब पहुंच चुकी है और उत्तर प्रदेश देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। प्रदेश की जीएसडीपी वर्ष 2012–16 के दौरान लगभग 12.88 लाख करोड़ थी, जो आज बढ़कर 35–36 लाख करोड़ के स्तर पर पहुंच रही है। प्रति व्यक्ति आय 43,000 से बढ़कर 1,20,000 के करीब पहुंच गई है। सीडी रेशियो, जो पहले 44 प्रतिशत था, आज 62–65 प्रतिशत तक पहुंच चुका है और इसे 70 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले साढ़े आठ वर्षों में सरकार ने कोई नया टैक्स नहीं लगाया। डीजल–पेट्रोल आज उत्तर प्रदेश में देश के अन्य राज्यों की तुलना में सबसे सस्ता है। ये सब तब हुआ है जब योजनाओं में लीकेज रोकी गई, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया गया और संसाधनों का सही उपयोग किया गया।

भारत विदेशी उपग्रह प्रक्षेपण के लिए सस्ता विकल्प ही नहीं, बल्कि भरोसेमंद और समयबध्द भागीदार भी बना

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत ने अंतरिक्ष की दुनिया में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। हम आपको बता दें कि श्रीहरिकोटा से उड़े इसरो के सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान एलवीएम3 एम6 ने अमेरिका के संचार उपग्रह ब्लूबर्ड ब्लॉक 2 को पृथ्वी की निम्न कक्षा में सटीकता के साथ स्थापित कर दिया है। यह केवल एक सफल प्रक्षेपण नहीं था बल्कि भारत की तकनीकी क्षमता, रणनीतिक आत्मविश्वास और वैश्विक विश्वसनीयता का प्रदर्शन भी था। हम आपको बता दें कि 43.5 मीटर ऊंचे और दो एस200 ठोस बूस्टरों से लैस इस भारी रॉकेट ने लगभग 15 से 16 मिनट की उड़ान के बाद 6100 किलोग्राम वजनी उपग्रह को करीब 520 किलोमीटर ऊंची कक्षा में स्थापित किया। यह एलवीएम3 के इतिहास का अब तक का सबसे भारी पेलोड है जिसे भारतीय धरती से अंतरिक्ष में पहुंचाया गया। इस मिशन के साथ एलवीएम3 ने अपनी छठी परिचालन उड़ान और तीसरी समर्पित वाणिज्यिक उड़ान पूरी की। यह प्रक्षेपण इसरो की वाणिज्यिक इकाई न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड और अमेरिका स्थित एएसटी स्पेसमोबाइल के बीच हुए समझौते के तहत किया गया। ब्लूबर्ड ब्लॉक 2 सीधे मोबाइल से जुड़ने वाली अगली पीढ़ी की उपग्रह संचार प्रणाली का हिस्सा है, जो बिना किसी विशेष उपकरण के 4जी और 5जी सेवाएं देने के लिए तैयार की गई है। इसका विशाल फेज्ड एरे एंटेना इसे निम्न कक्षा में तैनात सबसे बड़े वाणिज्यिक संचार उपग्रहों में शामिल करता है। इस मिशन की सफलता पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने बताया कि नियोजित कक्षा के मुकाबले वास्तविक कक्षा में केवल मामूली अंतर रहा, जो प्रक्षेपण की उच्च सटीकता को दर्शाता है। इसरो प्रमुख ने इसे भारत के भारी प्रक्षेपण कार्यक्रम के लिए मील का पत्थर बताया। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस उपलब्धि पर वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को बधाई देते हुए कहा कि यह मिशन न केवल गगनयान जैसे भविष्य के मानव अंतरिक्ष अभियानों की नींव मजबूत करता है

बल्कि वैश्विक वाणिज्यिक प्रक्षेपण बाजार में भारत की भूमिका को भी और धार देता है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि भारी पेलोड उठाने की यह क्षमता आत्मनिर्भर भारत के संकल्प का ठोस प्रमाण है। देखा जाये तो एलवीएम3 एम6 की यह उड़ान रणनीतिक स्तर पर एक सधी हुई चुनौती है। आज के दौर में अंतरिक्ष केवल विज्ञान का क्षेत्र नहीं रहा, यह शक्ति संतुलन का नया मोर्चा बन चुका है। जिसने अंतरिक्ष पर पकड़ बनाई, उसने संचार, निगरानी, युद्ध और अर्थव्यवस्था सभी पर बढ़त बना ली। ऐसे में भारत का भारी उपग्रहों को भरोसेमंद ढंग से कक्षा में पहुंचाना सीधा संदेश है कि देश अब केवल उभरती शक्ति नहीं, बल्कि निर्णायक खिलाड़ी है। हम आपको बता दें कि ब्लूबर्ड ब्लॉक 2 जैसे उपग्रह सीधे मोबाइल से जुड़ने वाली वैश्विक संचार संरचना का हिस्सा हैं। इसका अर्थ है कि भविष्य में युद्ध, आपदा प्रबंधन और खुफिया गतिविधियों में संचार पर निर्भरता और भी बढ़ेगी। भारत द्वारा ऐसे उपग्रहों का प्रक्षेपण करना यह दिखाता है कि वह इस नई संचार व्यवस्था के केंद्र में अपनी जगह पक्की कर रहा है। यह केवल अमेरिका के साथ व्यावसायिक सहयोग नहीं, बल्कि रणनीतिक भरोसे की मुहर भी है। साथ ही एलवीएम3 की क्षमता भारत को उन गिने चुने देशों की कतार में खडा करती है जो भारी पेलोड को निम्न कक्षा में सटीकता से भेज सकते हैं। इसका सीधा असर यह है कि भारत अब विदेशी उपग्रह प्रक्षेपण के लिए एक सस्ता विकल्प ही नहीं, बल्कि भरोसेमंद और समयबद्ध भागीदार बन रहा है। वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में यह बढ़त चीन और यूरोप जैसे प्रतिस्पर्धियों के लिए साफ चेतावनी है। सामरिक दृष्टि से देखें तो भारी प्रक्षेपण क्षमता का मतलब है भविष्य में भारत अपने सैन्य संचार, निगरानी और नेविगेशन उपग्रहों को भी अधिक सुरक्षित और तेजी से तैनात कर सकेगा। यह क्षमता संकट के समय आत्मनिर्भर प्रतिक्रिया की गारंटी देती है। गगनयान जैसे मानव मिशनों की तैयारी भी इसी कड़ी का हिस्सा है, जहां तकनीक, आत्मविश्वास और रणनीति एक साथ आगे बढ़ते हैं। कुल मिलाकर एलवीएम3 एम6 की सफलता यह साबित करती है कि भारत अब अंतरिक्ष में केवल झंडा गाड़ने नहीं, बल्कि नियम तय करने की तैयारी में है। यह मिशन दुनिया को साफ संदेश देता है कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम अब ठोस और आक्रामक क्षमता के युग में प्रवेश कर चुका है।

Modi Cabinet ने लिया बड़ा फैसला, राजधानी Delhi को धुएं और प्रदूषण से मुक्ति दिलाने वाली योजना को दी मंजूरी

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में जो निर्णय लिया गया, वह दिल्ली की दमघोंटू हवा के खिलाफ सीधी जंग का ऐलान है। हम आपको बता दें कि मोदी मंत्रिमंडल ने दिल्ली मेट्रो रेल परियोजना के चरण पांच ए को स्वीकृति देकर यह साफ कर दिया है कि अब राजधानी को यूं ही धुएं और जाम के हवाले नहीं छोड़ा जाएगा। बारह हजार पंद्रह करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली सोलह किलोमीटर लंबी इस नई मेट्रो विस्तार योजना में तेरह नए स्टेशन होंगे, जिनमें दस भूमिगत और तीन एलिवेटेड होंगे। इसके साथ ही दिल्ली मेट्रो नेटवर्क चार सौ किलोमीटर की ऐतिहासिक सीमा पार कर लेगा। यह वही दिल्ली है जहां रोजाना औसतन पैंसठ लाख लोग मेट्रो से सफर करते हैं और सड़कों पर गाड़ियों का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। इस परियोजना के तहत तीन नए गलियारे विकसित किए जाएंगे। पहला गलियारा रामकृष्ण आश्रम मार्ग से इंद्रप्रस्थ तक बनेगा, जो कर्तव्य भवन जैसे अहम प्रशासनिक क्षेत्र को सीधी मेट्रो कनेक्टिविटी देगा। दूसरा गलियारा एरोसिटी से एयरपोर्ट टर्मिनल एक को जोड़ेगा, जिससे दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल एक और तीन के बीच मेट्रो से सीधा संपर्क संभव होगा। तीसरा और सबसे रणनीतिक

गलियारा तुगलकाबाद से कालिंदी कुंज तक जाएगा, जो नोएडा और गुरुग्राम के बीच एक वैकल्पिक रास्ता देगा। इन तीनों गलियारों का साझा असर यह होगा कि सड़कों पर ट्रैफिक घटेगा, निजी वाहनों पर निर्भरता कम होगी और प्रदूषण के सबसे बड़े स्रोतों में से एक पर सीधा प्रहार होगा। अब जरा इस निर्णय को उस हकीकत के संदर्भ में देखिए, जहां हर सर्दी में दिल्ली गैस चेंबर बन जाती है। स्कूल बंद होते हैं, बुजुर्ग और बच्चे घरों में कैद हो जाते हैं और सरकारें बयानबाजी में उलझी रहती हैं। ऐसे में मेट्रो विस्तार का यह कदम किसी तात्कालिक उपाय जैसा नहीं, बल्कि दीर्घकालिक समाधान की बुनियाद है। मेट्रो का मतलब है हजारों कारें और दोपहिया वाहन सड़कों से गायब। मेट्रो का मतलब है ईंधन की बचत, धुएं में कमी और समय की बचत भी। जब तुगलकाबाद से कालिंदी कुंज तक मेट्रो पहुंचेगी तो नोएडा से गुरुग्राम जाने वाला ट्रैफिक दिल्ली की सड़कों की बजाय पटरियों पर दौड़ेगा। यह भी याद रखना होगा कि भारत का मेट्रो नेटवर्क अब दुनिया में तीसरे स्थान पर है। 2014 में जहां केवल पांच शहरों में मेट्रो थी, आज छब्बीस शहर इससे जुड़ चुके हैं। औसत दैनिक यात्रियों की संख्या अट्ठाइस लाख से बढ़कर एक करोड़ पंद्रह लाख से अधिक हो चुकी है। यह आंकड़े सिर्फ विकास का बखान नहीं करते, बल्कि यह बताते हैं कि देश का आम नागरिक मेट्रो को अपना रहा है, उस पर भरोसा कर रहा है। दिल्ली में यह भरोसा और मजबूत होने जा रहा है। देखा जाये तो दिल्ली का वायु प्रदूषण कोई प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि वर्षों की नीतिगत शिथिलता और शहरी अव्यवस्था का नतीजा है। हर साल पराली, मौसम और पड़ोसी राज्यों पर दोष मढ़कर हाथ खड़े कर देना आसान रहा है। लेकिन सड़कों पर बढ़ती गाड़ियों, कमजोर सार्वजनिक परिवहन और बेतरतीब शहरी फैलाव पर चोट करने की हिम्मत कम ही दिखाई गई। आज का यह मेट्रो विस्तार निर्णय उसी हिम्मत की झलक है। यह फैसला बताता है कि सरकार अब समस्या की जड़ पर वार करने को तैयार है। मेट्रो कोई जादुई छड़ी नहीं, लेकिन यह सबसे भरोसेमंद हथियार जरूर है। जब सार्वजनिक परिवहन सस्ता, सुलभ और तेज होता है, तो लोग स्वेच्छा से कार छोड़ते हैं। यही बदलाव हवा को साफ करता है, शहर को सांस लेने लायक बनाता है। दिल्ली मेट्रो के नए गलियारे केवल नक्शे पर खिंची लाल और नीली रेखाएं नहीं हैं, वे उस सोच का प्रतीक हैं जिसमें विकास और पर्यावरण को आमने सामने खड़ा नहीं किया जाता। अगर यह परियोजना तय समय पर पूरी होती है और इसके साथ बस सेवाओं, पैदल मार्गों और अंतिम छोर कनेक्टिविटी पर भी ध्यान दिया गया, तो आज का दिन इतिहास में दर्ज होगा। यह दिन उस मोड़ की तरह याद किया जाएगा जब दिल्ली ने धुएं के आगे घुटने टेकने से इंकार किया और पटरी पर दौड़ती मेट्रो को अपनी साफ सांसों का जरिया बनाया।

विधायकों को बैठकी करते रहना चाहिए- केशव

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने राज्य में भारतीय जनता पार्टी के विधायकों की बैठक पर कहा कि जब विधानसभा होती है तो सभी विधायक एक साथ बैठक करते हैं और करना चाहिए। इसको ब्राह्मण, ठाकुर आदि के चश्मे से नहीं देखना चाहिए जो देखते हैं उनका चश्मा गलत विधायकों को मीटिंग करते रहना चाहिए।जानकारी के अनुसार लखनऊ में सह–भोज के बहाने बीजेपी के लगभग 40 ब्राह्मण बीजेपी विधायक पी.एन. पाठक के घर पर एकजुट हुए।कई अहम मुद्दों पर बातचीत हुई। इस बैठक में शामिल होने वाले विधायकों में पी.एन. पाठक आयोजक रत्नाकर मिश्र, उमेश द्विवेदी, प्रकाश द्विवेदी, रमेश मिश्र, शलभमणि त्रिपाठी, विपुल दूबे, राकेश गोस्वामी, रवि शर्मा, विनोद चतुर्वेदी, संजय शर्मा, विवेकानंद पाण्डेय, अनिल त्रिपाठी, अंकुर राज तिवारी, साकेत मिश्र, बाबूलाल तिवारी, विनय द्विवेदी, सुभाष त्रिपाठी, अनिल पाराशर, कैलाशनाथ शुक्ला, प्रेमनारायण पाण्डेय, ज्ञान तिवारी, सुनील दत्त द्विवेदी, धर्मेंद्र सिंह भूमिहार, शामिल थे। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय ने कहा कि इस पर मैं क्या कह सकता हूं।उनका अपना मैटर है।

अखिलेश का बीजेपी पर तीखा वार, यूपी भर्तियों में ओबीसी आरक्षण की लूट, 30 हजार पदों पर बताई गड़बड़ी

संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर उत्तर प्रदेश सरकार की भर्तियों में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को संवैधानिक रूप से अनिवार्य आरक्षण नहीं देने और पिछले पांच वर्षों में आरक्षित श्रेणियों के पदों की बड़े पैमाने पर "लूट" का बुधवार को आरोप लगाया। यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि भाजपा संविधान के तहत ओबीसी के लिए निर्धारित 27 प्रतिशत आरक्षण में से लगभग एक–तिहाई हिस्से को खारिज कर रही है, जिससे उसका "संविधान और आरक्षण विरोधी चेहरा" उजागर हो रहा है। उन्होंने पोस्ट के साथ एक चार्ट भी साझा किया और कहा, "पिछले पांच साल में हुई सभी भर्तियों में पीडीए (पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक) वर्ग के पदों की लूट हुई है। ये पिछली चार भर्तियों का लेखा–जोखा है। इन सभी भर्तियों में

30 हजार से अधिक पीडीए पदों की लूट हुई। चोरी पकड़े जाने के बाद सरकार ने तथाकथित समिति गठित की, लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई, केवल मीडिया मैनेजमेंट हुआ। अखिलेश यादव ने सरकार से सवाल किया, "क्या ये पीडीए विरोधी सरकार बताएगी कि वह आखिरकार कब तक ओबीसी, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आरक्षण की लूट करती रहेगी?

बिजली व्यवस्था के निजीकरण पर अभी कोई अंतिम फैसला नहीं : ऊर्जा मंत्री

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा ने बुधवार को राज्य विधानसभा में स्पष्ट किया कि बिजली व्यवस्था के निजीकरण को लेकर सरकार ने अभी तक कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया है और जो भी फैसला होगा, वह जनता के व्यापक हितों को ध्यान में रखकर लिया जाएगा। शर्मा ने प्रश्नकाल के दौरान समाजवादी पार्टी (सपा) की सदस्य रागिनी सोनकर द्वारा उठाए गए सवालों के जवाब में कहा कि सरकार इस मुद्दे पर सभी पहलुओं पर विचार कर रही है, लेकिन फिलहाल कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, "जहां तक (बिजली व्यवस्था के) निजीकरण की बात है, मैंने पहले भी स्पष्ट किया है कि इस पर अभी अंतिम फैसला नहीं लिया गया है। जो भी निर्णय होगा, वह राज्य की जनता के व्यापक हित में, सभी वर्गों को बेहतर बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लिया जाएगा।" ऊर्जा मंत्री ने अदाणी समूह से महंगी दरों पर बिजली खरीदे जाने के आरोपों पर भी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, "वर्ष 2014 में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी।

संपादकीय

साइबर ठगी का जाल

शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा जब कोई बुजुर्ग या आम लोग साइबर ठगी के शिकार न हुए हों। पिछले दिनों महाराष्ट्र में एक सेवानिवृत्त जज भी डिजिटल अरेस्ट स्कैम के शिकार हो गए। पिछले सप्ताह ऐसा ही एक अन्य दुखद मामला पुणे से सामने आया जब साइबरों ठगों ने एक 82 वर्षीय सेवानिवृत्त अधिकारी को डिजिटल हाउस अरेस्ट स्कैम में फंसाकर 1.19 करोड़ लूट लिए। कई दिन के मानसिक उत्पीड़न व आर्थिक क्षति से टूट गए वृद्ध की आखिर सदमे से मौत हो गई। यह विचारणीय पहलू है कि कैसे पढ़े–लिखे लोग साइबर ठगों की साजिश की गिरफ्त में आ जाते हैं। वैसे आम आदमी को साइबर ठगों व फर्जी फोन कॉल्स से बचाने के लिये पुख्ता व्यवस्था होना बेहद जरूरी है। आम लोगों की सुविधा व सुरक्षा के लिये सरकार के प्रयासों के बाद अब दूरसंचार विभाग ने मार्च 2026 में ऐसी व्यवस्था लागू करने के तैयारी की, जिसमें बिना ट्रू–कॉलर के खुद मोबाइल अवांछित फोन के प्रति सजग करेगा। नियामक संस्था ट्राई ने इस प्रस्ताव पर सहमति जतायी है। यह विडंबना ही कि जैसे–जैसे नई तकनीक आम आदमी के जीवन में सुविधा लाती है, वहीं असामाजिक तत्व उसे लूट–खसोट का हथियार बनाने में आगे निकल जाते हैं। देश में इंटरनेट सेवाओं के विस्तार और मोबाइल फोन की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ ही साइबर अपराधों में खासी तेजी आई है। जरा सी चूक होने पर लाखों लोग, साइबर धोखाधड़ी में अपने जीवनभर की पूंजी कुछ ही क्षणों में गवां देते हैं। अपराधियों का संजाल इतना विस्तृत व रहस्यमय है कि प्रवर्तन एजेंसियां जब तक उन तक पहुंचती हैं, पैसा विदेशों में ट्रांसफर हो जाता है। इस संकट का एक पहलू अनजान नंबरों से आने वाली फोन कॉल्स होती हैं, जिसके जरिये अपराधी लोगों को भ्रमित कर जीवन की जमा पूंजी लूट लेते हैं। दरअसल, संचार क्रांति के चलते तमाम सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हुई हैं, लेकिन इस सुविधा के साथ पुरानी पीढ़ी साम्य नहीं बैठा पाती है। अब इसी चुनौती को दूर करने के लिये दूरसंचार विभाग आम उपभोक्ता को ऐसी सुविधा देने जा रहा है, जिसमें फोन करने वाले को पहचाना जा सकेगा। फोन पर कॉल करने वाले व्यक्ति का नाम लिखा नजर आएगा। फिर व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार फोन कॉल्स लेना तय कर सकता है। दूरसंचार नियामक ट्राई की मंजूरी के बाद इस दिशा में तेजी से काम हो रहा है। हालांकि, फोन करने वाले व्यक्ति की जानकारी जुटाने के कई ऐप अभी भी मौजूद हैं, लेकिन उनका उपयोग कुछ ही लोग कर पाते हैं। वैसे ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ऐप द्वारा दी जाने वाली सूचना सटीक है। ऐसे में यदि दूरसंचार विभाग की कोशिश सिरे चढ़ती है तो इससे करोड़ों उपभोक्ताओं को सुरक्षा कवच मिल पाएगा। पहले इस सुविधा का लेना मांग पर आधारित था, लेकिन बाद में तय किया गया कि यह सुविधा प्रत्येक मोबाइल उपयोगकर्ता को उपलब्ध करायी जाएगी। विश्वास किया जा रहा है कि अगले साल मार्च तक पूरे देश में यह सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। जानकारों का मानना है कि इस सुविधा से किसी सीमा तक मोबाइल के जरिये धोखाधड़ी करने वाले अपराधियों पर नकेल कसी जा सकेगी। मोबाइल उपयोगकर्ता की सजगता इसमें मददगार हो सकेगी। स्क्रीन पर अनजान नंबर व नाम देखने के बाद मोबाइलधारक फोन कॉल्स को उठाने से बच सकता है। वैसे इसके साथ ही देश में डिजिटल साक्षरता की दिशा में व्यापक पहल करने की जरूरत है। विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिये लोगों को सजग–सतर्क किए जाने की आवश्यकता है। शहरों से लेकर ग्राम पंचायतों तक जनजागरण अभियान चलाकर लोगों को बताया जाना चाहिए कि बैंक, सीबीआई, कोर्ट या अन्य प्रवर्तन एजेंसियां कभी फोन करके उनके बैंक खाते या अन्य मामलों की जानकारी नहीं मांगती हैं। ऐसे फर्जी कॉल्स की प्रमाणिकता की पुष्टि करने के लिये हेल्पलाइन सुविधाओं में विस्तार करने की भी जरूरत है। देश में मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराने वाली कंपनियों को भी बाध्य किया जाना चाहिए कि वे उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करके संदिग्ध फोन नंबरों के प्रति सचेत करें।

कहानी : इंस्टाग्राम वाला प्यार

–प्रियंका सौरभ

रिया को बचपन से ही छायाचित्र लेने का शौक था। जब उसके हमउम्र बच्चे खिलौनों, खेलों और अपने छोटे–छोटे झगड़ों में व्यस्त रहते थे, रिया किसी भी साधारण–सी वस्तु को दूसरी नज़र से देखने लगती। वह सुबह की किरण को भी ऐसे देखती जैसे वह किसी कोमल कहानी का पहला अध्याय हो। उसे लगता था कि दुनिया में हर वस्तु, हर मनुष्य, हर क्षण अपना कोई रहस्य छुपाए बैठा है, जिसे सिर्फ वही पकड़ सकती है। स्कूल के दिनों में उसे एक सादा–सा कैमरा मिला थाकृसस्ता, छोटी दुकान वाला, लेकिन रिया के लिए वह दुनिया का सबसे अनमोल साथी था। उसी कैमरे ने उसके भीतर छिपे कलाकार को जन्म दिया था। समय बदला, वह कॉलेज में पहुँची और उसके भीतर की अनुभूतियाँ भी गहरी होती गईं। शहर के एक कोने में वह एक छोटे से कमरे में रहती थी। दीवारें साधारण थीं, पर उन पर टँगी उसकी तस्वीरें उन्हें एक अलग पहचान देती थीं। तस्वीरों में रोशनी थी, अंधेरा था, रंग थे, धुंधलापन था, और सबसे बढ़करकृ भावनाएँ थीं। हर तस्वीर किसी न बोले हुए वाक्य की तरह थी। प्रत्येक छवि मानो कह रही थी कि दुनिया में जो ध्वनि नहीं कह पाती, वह छाया कह सकती है। किसी दिन उसके मित्रों ने उसे सलाह दी कि वह अपने चित्रों को एक मंच पर साझा करे। वह एक ऐसा मंच था जहाँ लोग अपने विचार, चित्र, वीडियो और दिनचर्या साझा करते थे। रिया ने अपना एक पृष्ठ बना लिया। उसने उसका नाम रखाकृ "क्षणचित्र–संग्रह।" नाम कोमल था और सरल। लेकिन उसका पृष्ठ देखते ही लोग ठहर जाते। रिया को यह उम्मीद नहीं थी कि लोग उसकी कला को इतना पसंद करेंगे, मगर धीरे–धीरे उसके अनुयायी बढ़ते गए। उन्हीं अनुयायियों में एक थाकृआरव। वह चुपचाप रिया के प्रत्येक चित्र को पसन्द करता। न कोई टिप्पणी लिखता, न कोई लम्बा संदेश भेजता, बस मौन में प्रशंसा करता। कभी–कभी वह एक चमकता तारा ध भेज देता, मानो वह किसी दूर देहात के आसमान से अपना छोटा–सा प्रकाश रिया की दुनिया में पहुँचा रहा हो। रिया को यह अजीब भी लगता और आकर्षक भी। दुनिया में जहाँ लोग दिखावे और विस्तार में खो जाते थे, वहाँ यह मौन व्यक्ति उसे उलझाता और खींचता दोनों था। एक दिन रिया ने अचानक उससे पूछाकृ"तुम मेरे चित्रों को पसन्द करते हो, पर बोलते क्यों नहीं?" काफी देर बाद उत्तर आयाकृ"शब्द कहीं खो जाते हैं३ छवियाँ नहीं।" यह वाक्य रिया के दिल में सीधा उतर गया। उसे पहली बार लगा कि कोई उसकी तस्वीरों के पीछे छुपी खामोशी को समझता है। वह उस उत्तर को पढ़कर देर रात तक छत की ओर देखती रही। उसने यही सोचा कि क्या कोई ऐसा हो सकता है जो उसे उसके कैमरे की नजरों से समझ सके? धीरे–धीरे बातचीत शुरू हुई। पहले एक–दो वाक्य। फिर लंबी बातें। फिर रातों को खिंचती उन अनंत चर्चाओं की लड़ी। दोनों एक–दूसरे को अपने मन के ऐसे कोने दिखाने लगे जिन्हें शायद उन्होंने कभी किसी को नहीं दिखाया था।रिया अक्सर पूछतीकृ "तुम हमेशा चमकता तारा क्यों भेजते हो?" आरव उत्तर देताकृ"क्योंकि तारे दूर होते हैं, पर रोशनी दे जाते हैं। मैं भी ऐसा ही हूँ३ शायद दूर से ही अच्छा लगता हूँ।" रिया को यह उत्तर बहुत गहरा लगता। वह सोचती कि यह लड़का आखिर है कौन? क्या है इसमें जो उसके शब्दों में ऐसी नर्मी है? काफी समय बाद उन्होंने मिलने का निश्चय किया। एक शांत कैफ़े चुना गयाकृपुराने शहर के किनारे पर स्थित, जहाँ हल्की पीली रोशनी थी और धीमे–धीमे मधुर गीत बजते रहते थे। रिया जब वहाँ पहुँची तो उसकी धड़कन तेज थी। उसने पहली बार आरव को देखाकृएक साधारण–सा युवक, जिसके चेहरे पर न ज्यादा बनावट थी, न दिखावे का भाव। पर उसकी आँखें३ वे जैसे रिया की तस्वीरों की कहानियों को पढ़ चुकी थीं। आरव ने बैठते ही कहाकृ "तुम उतनी ही सच्ची लगती हो जितनी तुम्हारी तस्वीरों में हो। शायद उससे भी ज्यादा।" रिया को यह बात बहुत गहराई से लगी। कैफ़े की उस शाम में दोनों ज़्यादा नहीं बोले। पर दिलों ने बहुत कुछ कह दिया। वे चुप भी रहे और बात भी करते रहे। समय बीतता गया, और उनका रिश्ता गहराता गया। दोनों एक–दूसरे के सपने, दर्द, डर, यादें और अधूरे पन्ने साझा करने लगे। रिया अब हर तस्वीर ऐसे डालती थी जैसे वह आरव से कुछ कह रही हो। और आरव हर तस्वीर को ऐसे पढ़ता था जैसे वह रिया की धड़कन सुन रहा हो। लेकिन जीवन में मोड़ आते ही हैं। एक दिन रिया ने देखा कि आरव किसी दूसरी लड़की की कहानी पर बार–बार दिल का चिह्न भेज रहा था। उसके मन में संदेह जागा। उसे लगा कि शायद वह सिर्फ उसी से नहीं, औरों से भी ऐसे ही बात करता होगा। गुस्से और आहत मन से उसने आरव पर प्रतिबंध लगा दिया। अब उसके संदेश दिखाई नहीं देते, न यह पता चलता कि उसने देखा भी या नहीं। यह छोटी–सी व्यवस्था रिया की दुनिया को अचानक भारी और ठंडी बना गई। कुछ देर बाद आरव ने संदेश भेजा– "रिया, मुझे नहीं पता कि तुमने ऐसा क्यों किया। शायद तुम्हें लगा कि मैं बदल गया हूँ, पर सच यह है कि मैंने बस एक पुरानी मित्र की कहानी पर प्रशंसा भेजी थी। अगर तुम्हें लगा कि मैं तुम्हें हल्का समझता हूँ, तो यह मेरा दोष है। पर मैं अब भी वही तारा हूँकृ तुम्हारे आसमान में चमकने की कोशिश करता हुआ।" रिया यह पढ़ते ही टूट गई। उसके भीतर अपराधबोध उमड़ आया। उसने प्रतिबंध हटाया और लिखाकृ "क्या हम दिखावे वाली दुनिया से बाहर आकर असली जीवन में एक–दूसरे को अपना सकते हैं?" आरव ने उत्तर दियाकृ "हाँ। क्योंकि प्रेम वह नहीं जिसे चमकने के लिए आवरण की जरूरत पड़े। प्रेम वह है जो बिना आवरण के भी उज्ज्वल हो।" इसके बाद उनकी दुनिया बदलने लगी। वे एक–दूसरे से मिलने लगे, साथ घूमने लगे, एक–दूसरे के परिवारों से धीरे–धीरे परिचित होने लगे। रिया अब केवल तस्वीरें नहीं खींचती थीकृवह क्षणों को जीती थी। आरव अब केवल शब्द नहीं लिखता थाकृवह रिया का साथ निभाता था। एक शाम, जब रिया उदास थी क्योंकि किसी ने उसकी तस्वीर पर बहुत बुरा टिप्पणी लिख दिया था, आरव उससे मिलने उसके कमरे तक चला गया। वह चुपचाप उसके पास बैठा रहा, जब तक कि रिया ने अपने आँसू पोछकर कैमरा उठाया ही नहीं। आरव बोलाकृ "दुनिया की एक आवाज़ तुम्हारी कला को धुंधला नहीं कर सकती। तुम प्रकाश हो, रिया। और प्रकाश सिर्फ फैलता हैकृरुकता नहीं।" रिया ने पहली बार महसूस किया कि यह व्यक्ति सिर्फ एक डिजिटल दुनिया का परिचित नहीं, बल्कि जीवन में खड़ा एक सच्चा साथी है। दिन बीतते गए। उनके बीच समझ भी बढ़ी, निकटता भी। कभी वे एकसाथ चाय पीते, कभी लंबी सैर करते, कभी देर रात तक बैठकर बातें करते। रिया अक्सर कहतीकृ"कभी–कभी लगता है कि तुम मेरे कैमरे की तरह हो। जो मेरे अंदर छुपी रोशनी को बाहर निकाल देता है।" आरव मुस्कुराकर कहताकृ"और तुम मेरे भीतर के अँधेरे को हल्का कर देती हो।" एक दिन चलते–चलते आरव ने बिना किसी तैयारी के कहाकृ "रिया, तुम्हारे साथ रहने से लगता है कि मैं बेहतर हो गया हूँ। क्या तुम जीवन का यह सफर मेरे साथ आगे बढ़ाना चाहोगी?" रिया ने उसकी आँखों में देखा। वहीं चमकता तारा थाकृवही पुरानी रोशनी जो उसके संदेशों में झलकती थी। उसे उत्तर देने की जरूरत नहीं थी। उसका हाथ धीरे से आरव के हाथ में चला गया। यह कहानी किसी आवरण, किसी प्रदर्शन, किसी लोकप्रियता से नहीं बनी। यह दो आत्माओं की कहानी थीकृजो एक डिजिटल मंच से होकर जीवन के असली रास्तों तक पहुँचीं। उनका प्रेम किसी चमकदार चित्र की तरह नहीं, बल्कि किसी मुलायम छाया की तरह थाकृजो आँखों से नहीं, दिल से दिखती है। इस प्रकार इंस्टाग्राम में शुरू हुई दास्तान, जीवन के शांत और ईमानदार पन्नों में पूर्ण हुई। और उनका प्रेम किसी प्रतीक चिह्न, किसी टिप्पणी, किसी प्रदर्शन से नहीं, बल्कि एक मुस्कान से आगे बढ़ता रहाकृवह मुस्कान जो दो दिलों के मिलने से बनती है, न कि किसी कृत्रिम आवरण से। रिया और आरव की दुनिया उस दिन से बदल गई थी जब रिया ने उसका हाथ थामा था। दोनों के बीच जो मौन स्नेह जन्मा था, उसने धीरे–धीरे उनके जीवन को एक नई दिशा दी। अब वे सिर्फ एक–दूसरे की तस्वीरों और शब्दों के सहारे नहीं थे, बल्कि एक–दूसरे के दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके थे। रिया की सुबहें अब आरव के संदेश से शुरू होतीं और रातें उसकी आवाज़ की गर्माहट से समाप्त। आरव, जो हमेशा खुद को एक दूर चमकते तारे की तरह मानता था, अब रिया की ज़िंदगी का स्थायी प्रकाश बन गया था। पर प्रेम सिर्फ सहजता नहीं, परख भी लाता है। और यह परख धीरे–धीरे उनके जीवन में आने लगी। सबसे पहले चुनौती आईकृपरिवार की। रिया का परिवार पारंपरिक था। वे मानते थे कि लड़की को अपने ही समाज, अपने ही ढंग के परिवार में भेजना उचित होता है। जब रिया ने धीरे से घर पर बताया कि वह किसी से मिलती है, जिसे वह जीवनसाथी के रूप में देखती है, घर में चुप्पी फैल गई। उसकी माँ की आँखों में चिंता उतर आई। पिता ने बस इतना कहाकृ "पहले तुम्हारा काम ठीक से जम जाए। जीवनसाथी की बात बाद में करेंगे।" रिया समझ गई कि परिवार उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं ले रहा। उधर आरव के परिवार में भी कुछ ऐसा ही था। आरव का परिवार मध्यमवर्गीय था, जहाँ बेटे की पसंद हमेशा परंपराओं से टकराती थी। जब उसने रिया के बारे में बात की, उसकी माँ ने पूछाकृ "किसी मंच पर देखकर पसंद आ गई? क्या तुम उसे सच में पहचानते हो?" आरव ने मुस्कुराकर कहाकृ "माँ, मैं उसे मंच पर नहीं, उसकी खामोशी में पहचानता हूँ।" पर उसकी माँ को यह जवाब संतोष नहीं दे सका। रिया और आरव दोनों समझ रहे थे कि प्रेम आसान नहीं है। लेकिन उनके भीतर का विश्वास अभी भी अडिग था। समय बीतता गया। रिया की कला भी और निखरने लगी। अब वह सिर्फ भावनाएँ नहीं, जीवन के कठिन प्रश्न भी अपनी छवियों में कैद करने लगी। उसकी तस्वीरें सामाजिक मुद्दों को भी छूने लगींकृ अकेलापन, स्त्री की बेचौनी, शहर का अराजक सौंदर्य, टूटते परिवार, बदलती नैतिकताएँ। लोग उसकी कला को सराहने लगे, पर उसके आस–पास आलोचना भी बढ़ी। कभी किसी ने लिखाकृ "तस्वीरों में दर्द दिखाकर लोकप्रियता पाने की कोशिश है।" कभी किसी ने उसकी निजी तस्वीरों पर विचित्र सुझाव दे दिए। रिया इन टिप्पणियों से टूटती, पर हर बार आरव का सहारा उसे फिर खड़ा कर देता। आरव कहता "जो लोग तुम्हारे प्रकाश से डरते हैं, वे तुम्हें अंधेरे में धकेलने की कोशिश करेंगे। लेकिन तुम प्रकाश हो, रिया। तुम्हें फैलना ही है।" कुछ महीनों बाद रिया को एक बड़ा अवसर मिलाकृशहर के प्रतिष्ठित कलादृगृह में उसकी अकेली प्रदर्शनी। यह उसके जीवन का सबसे बड़ा क्षण था। पर इस खुशी में एक डर भी छुपा थाकृक्या वह इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी संभाल पाएगी? इस प्रदर्शनी की तैयारी में उसने रातें जागकर तस्वीरें चुनीं, कैनवास सजाए, नोट्स लिखे। हर बार थकने पर आरव उसके कमरे में आ जाता। कभी वह चित्रों को उठाकर दीवार पर टाँगता, कभी चाय बनाकर रख देता, कभी बस चुपचाप उसके पास बैठा रहता। प्रदर्शनी का दिन आया। कलादृगृह में लोग उमड़ पड़े। पत्रकार, कलाकार, विद्यार्थी, बुजुर्ग, परिवारकृहर वर्ग के लोग। रिया की चित्रदृदीवारों पर बार–बार लोग रुकते, पढ़ते, समझते, और प्रभावित होते। लेकिन भीड़ में एक चेहरा ऐसा भी था जो चुपचाप खड़ा थाकृ आरव। वह किसी परिचय की चाह नहीं रखता था। वह बस उस लड़की की चमक देख रहा था जो कभी अपने कमरे में कैमरा लेकर अकेले दुनिया को समझती थी। अब वही लड़की दुनिया को सोचने पर मजबूर कर रही थी। प्रदर्शनी सफल हुई। रिया को बहुत प्रशंसा मिली। पर खुशी में भी एक कोना खाली थाकृ क्योंकि उसका परिवार इस उपलब्धि को देखने नहीं आया था। रिया उस रात रो पड़ी। उसने आरव से कहाकृ "शायद मेरे परिवार को मेरी कला पर गर्व नहीं है।" आरव ने उसका हाथ पकड़कर कहाकृ "कभी–कभी परिवार को समझने में समय लगता है। तुम अपना मार्ग मत छोड़ो।" लेकिन आगे की चुनौती और गहरी थी। रिया को देश के दूसरे शहर में तीन महीने के लिए एक कलादृकार्यशाला का निमंत्रण मिला। यह उसके करियर के लिए बहुत बड़ा अवसर था। पर इसका मतलब थाकृ रीया और आरव के बीच दूरी। रीया असमंजस में थी। क्या वह आरव को छोड़कर तीन महीने जा पाएगी? क्या दूरी उनके संबंध को कमजोर कर देगी? आरव ने कहाकृ "रिया, प्रेम वह नहीं जो पास रहने से जीवित रहे। प्रेम वह है जो दूरी में भी धड़कता रहे। यह अवसर तुम्हारे लिए बहुत बड़ा है। तुम जाओ। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा।" रिया चली गई। शहर बदला, लोग बदले, हवाएँ बदलीं। आरव अपने काम में लग गया, पर रिया की अनुपस्थिति उसके भीतर एक खामोशी बनकर बैठने लगी। रीया भी नई जगह पर व्यस्त थी, पर हर शाम जब वह अपनी खिड़की से सूर्यास्त देखती, उसे आरव का चेहरा याद आताकृवही शांत, वही विश्वास से भरा। धीरे–धीरे दूरी ने दोनों की परीक्षा शुरू की। कभी समय नहीं मिलता, कभी मन नहीं लगता, कभी बातें कम हो जातीं। पर दोनों एक–दूसरे की तस्वीरों में, शब्दों में, यादों में अपना मार्ग खोज लेते। तीन महीने बीत गए। रिया लौटी। पर लौटते ही उसने पाया कि आरव पहले से ज्यादा चुप है। उसकी आँखों में थकान थी, चेहरे पर भार। रिया चिंतित हुई। उसने पूछाकृ "क्या हुआ?" आरव ने बताया कि उसके पिता की तबीयत बहुत खराब है और नौकरी भी अस्थिर हो गई है। उसके घर में आर्थिक संकट गहराता जा रहा था। आरव इस सब के बीच खुद को असहाय महसूस कर रहा था। रिया ने उसका हाथ पकड़कर कहाकृ "तुमने मेरे हर संघर्ष में साथ दिया है। अब मेरी बारी है। हम मिलकर सब ठीक करेंगे।" इन कठिनाइयों ने दोनों को और भी जोड़ दिया। रिया ने कला से मिलने वाले पैसों से कुछ सहयोग किया, पर उससे भी अधिक उसने आरव के परिवार का भावनात्मक सहारा बना। धीरे–धीरे आरव के पिता ठीक हुए। उसकी नौकरी भी स्थिर हुई। और एक शाम, जब सब कुछ सामान्य सा लगने लगा, आरव रिया को उसी कैफ़े में ले गया जहाँ वे पहली बार मिले थे। वहाँ चुपचाप बैठकर उसने कहाकृ "रिया, हमने दूरी भी देखी, संघर्ष भी देखे, असहमति भी, आँसू भी३ लेकिन देखो, हम अब भी साथ हैं। क्या तुम मेरे साथ पूरे जीवन की कहानी लिखने के लिए तैयार हो?" रिया मुस्कुराई। काफी देर तक चुप रही। फिर धीरे से बोलीकृ "जब तुम पहली बार अपना चमकता तारा भेजते थे, तब भी मैं तैयार थी३ बस तुमने देर कर दी।" दोनों हँस पड़े। और वहीं, उसी साधारण–सी मेज पर, प्रेम अपने सबसे सुंदर रूप में खिल उठा।

राशिफल

मेष :– विचारों की अस्थिरता आपको उलझनपूर्ण परिस्थिति में डालेगी। नौकरी–व्यवसाय के क्षेत्र में स्पर्धायुक्त वातावरण रहेगा। नए कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। प्रवास की संभावना है।

वृषभ :– मन की दुविधा ठोस निर्णय पर आने से रोकेगी जिससे हाथ आए अवसर आप खो देंगे। झक्वी व्यवहार के कारण संघर्ष में उतरने की संभावना है। नए कार्य के लिए दिन अच्छा नहीं है।

मिथुन :– आज का दिन लाभदायक साबित होने की आशा रख सकते हैं। सुबह से ताजगी और प्रसन्नता का अनुभव होगा। आर्थिक लाभ मिलने के साथ–साथ कहीं से गिफ्ट प्राप्त हो सकता है।

कर्क :– शरीर और मन में बेचौनी और अस्वस्थता का अनुभव होगा। मन की संदिग्धता और दुविधा आपकी निर्णयशक्ति को कसौटी के शिखर पर चढ़ाएंगे। वाद–विवाद से दूर रहें।

सिंह :– आज के दिन आपको विविध लाभ मिलने की संभावना है। ऐसे समय में मन का ढीलापन आपको लाभ से वंचित न कर दे, इसका ख्याल रखें। पदोन्नति और आय वृद्धि का योग है।

कन्या :– नए कार्य शुरू करने के लिए निर्मित योजनाओं को अमल में लाने का आज उत्तम समय है। व्यापार में लाभ होगा। बकाया वसूली के पैसे वापस मिलेंगे। पिता की तरफ से लाभ होगा।

तुला :– लंबी दूरी की यात्रा या धार्मिक स्थान की मुलाकात होगी। विदेश यात्रा के लिए अनुकूलता रहेगी। फिर भी आपको संतान और स्वास्थ्य के सम्बंध में चिंता रहेगी। धन का खर्च होगा।

वृश्चिक :– आज का दिन सावधानीपूर्वक बिताएं। नए कार्य शुरू न करें। क्रोध, आवेश और अनैतिक आचरण आपको कठिनाई में डाल सकते हैं। दुर्घटना से बचें।

धनु रू बौद्धिक, तार्किक, विचार–विनिमय और लेखन कार्य के लिए शुभ दिन है। भागीदारी में लाभ होगा। जीवनसाथी के साथ के सम्बंधों में अधिक घनिष्ठता रहेगी। मान–सम्मान मिलेगा।

मकर :– आज से आपके व्यापार–धंधे का विकास होगा। आर्थिक रूप से लाभदायक दिन होने से पैसे की लेन–देन में सरलता रहेगी। परिवार में सुख– शांति का माहौल रहेगा।

कुंभ :– आज आप संतान और अपने स्वास्थ्य के सम्बंध में चिंतित रहेंगे। अपच, पेट–दर्द से परेशान होंगे। विचारों में तेजी से परिवर्तन मानसिक स्थिरता में खलल पहुंचाएगा।

मीन :– शारीरिक– मानसिक भय रहेगा। कुटुंबीजनों के साथ वाद–विवाद होगा। माताजी का स्वास्थ्य खराब होगा। अनचाही घटनाओं से आपके उत्साह में कमी आएगी। अनिद्रा से परेशान रहेंगे।

फिलिस्तीन के हमदर्द बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार के समय कहां गायब

–अजय कुमार

हिंदुस्तान में ऐसे नेताओं और राजनैतिक दलों की कमी नहीं है, जो दुनिया के किसी कोने में मुसलमानों के साथ खड़े होने में देरी नहीं करते हैं। इजरायल जब गाजा में हमास के आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई करता है, तो यहां तमाम दलों के नेता और मुस्लिम संगठन अपनी छाती पीटने और हिंसा पर उतारू हो जाते हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका वाड्रा तो विरोध स्वरूप फिलिस्तीन का बैग लेकर संसद में ही पहुंच गई थीं, लेकिन इन्हें दुनिया के किसी कोने में हिन्दुओं के साथ होने वाले अत्याचार और यहां तक कि उनकी हत्या पर भी मुंह खोलने में शर्म आती है। भारत में हर समय दलितों और पिछड़ों के नाम पर भारतीय जनता पार्टी या हिन्दू संगठनों पर हमलावर रहने वाले इन नेताओं को बांग्लादेश, पाकिस्तान में हिन्दुओं का अत्याचार नहीं दिखाई देता है। इसे मुस्लिम तुष्टिकरण की सियासत का चरम कहा जा सकता है। आज देश भर में बांग्लादेश में मारे गए हिन्दू युवक की हत्या पर धरना–प्रदर्शन हो रहा है, लेकिन इसमें अपवाद को छोड़कर कोई बड़ा मुस्लिम संगठन या फिर मुस्लिम की सियासत करने वाले नेता मौजूद नहीं हैं। यह बताता है कि हिन्दुओं के प्रति इन नेताओं का नजरिया क्या है। कांग्रेस के राहुल गांधी से लेकर समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव, आजाद समाज पार्टी के चंद्रशेखर आजाद और राष्ट्रीय जनता दल के तेजस्वी यादव तक सभी नेता चुप्पी साधे हैं। कारण साफ है मुस्लिम वोट बैंक बिखर जाने का डर। यह ओछी राजनीति दलितों–पिछड़ों की पीठ पर चढ़कर मुस्लिम तुष्टिकरण की सियासत सालों से करते चले आ रहे हैं। गौरतलब हो, बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार गिरने के बाद अगस्त 2024 से शुरू हुई हिंसा ने हिंदू समुदाय को निशाना बनाया है। रिपोर्टों के मुताबिक, हजारों हिंदू घरों पर हमले हुए, मंदिर तोड़े गए और महिलाओं पर अत्याचार किए गए। खासकर पिछड़े और दलित हिंदू, जैसे नमासुद्रा और अन्य जातियां, सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। ह्यूमन राइट्स वॉच और स्थानीय मीडिया के अनुसार, कम से कम 200 हिंदू मारे गए, जबकि संपत्ति का नुकसान करोड़ों डॉलर का है। इनमें दलित हिंदू समुदायों पर फोकस करें तो तस्वीर और भयावह है। बांग्लादेश के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले ये लोग पहले से ही गरीबी और भेदभाव का शिकार हैं। हिंसक भीड़ ने उनके गांवों को जला दिया, महिलाओं का अपहरण किया। फिर भी भारत के दलित नेता चुप हैं। क्यों? क्योंकि मुस्लिम वोट बैंक को खराब नहीं करना है। यह पाखंड साफ दिखता है, जब ये नेता घरेलू चुनावों में दलित कार्ड खेलते हैं। न्याय की दुहाई देने वाले कांग्रेस नेता राहुल गांधी खुद को दलितों का मसीहा बताते हैं। 'भारत जोड़ो यात्रा' में उन्होंने दलितों के घर भोजन किया, न्याय यात्रा निकाली। लेकिन बांग्लादेश में दलित हिंदुओं का नरसंहार? एक शब्द भी नहीं। संसद में या सोशल मीडिया पर कोई बयान नहीं। क्या कारण है? असल में राहुल की चुप्पी रणनीतिक है। 2024 लोकसभा चुनावों में कांग्रेस ने मुस्लिम–दलित गठबंधन पर दांव लगाया। अब बांग्लादेश मुद्दा उठाने से वह गठबंधन टूट सकता है। याद कीजिए, जब मणिपुर हिंसा हुई तो राहुल ने तुरंत दौरा किया, लेकिन बांग्लादेश? सन्नाटा। यह दलितों की राजनीति नहीं, बल्कि वोट बैंक की राजनीति है। दलितों की पीठ पर सवार होकर मुस्लिम तुष्टिकरण का खेल। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव से लेकर अखिलेश तक, पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फॉर्मूला उनका हथियार रहा है। उत्तर प्रदेश में 2022 विधानसभा चुनावों में उन्होंने मुस्लिम–यादव गठजोड़ को मजबूत किया। लेकिन बांग्लादेश के दलित हिंदुओं पर अत्याचार? अखिलेश की जुबान को लकवा मार गया। क्यों? क्योंकि समाजवादी पार्टी का लगभग 40 प्रतिशत वोट मुस्लिमों का है। अखिलेश ने कभी बांग्लादेश हिंसा का जिक्र नहीं किया। बल्कि वे राम मंदिर पर आक्षेप करते हैं, ताकि मुस्लिम खुश रहें। दलित नेता मायावती को कमजोर करने के लिए समाजवादी पार्टी ने चंद्रशेखर आजाद को समर्थन दिया। लेकिन असली सवाल अगर दलितों का हक बांग्लादेश में कुचला जा रहा है, तो चुप्पी क्यों? यह पिछड़ों की ओछी राजनीति है, जहां हिंदू दलितों को भुला दिया जाता है। आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के चंद्रशेखर आजाद खुद को भीम आर्मी का योद्धा बताते हैं। नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ वे सड़कों पर उतरे, दलित युवाओं को भड़काया। लेकिन बांग्लादेश में दलित हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार? उनकी आंखें बंद हैं। चंद्रशेखर ने नागरिकता संशोधन कानून को दलित–विरोधी बताया, जबकि बांग्लादेश के दलित हिंदू शरणार्थी बनने को तैयार हैं। नगीना, उत्तर प्रदेश से सांसद चंद्रशेखर समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर चुके हैं। मुस्लिम वोट के लालच में वे हिंदू दलितों के मुद्दे को नजरअंदाज कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर वे जातिवाद की बात करते हैं, लेकिन बांग्लादेश के दलितों का दर्द उन्हें न दिखाई देता है, न सुनाई। यह साफ है कि उनकी क्रांति सिर्फ वोट के लिए है, न कि सच्चे दलित हित के लिए। राष्ट्रीय जनता दल के तेजस्वी यादव बिहार में मुस्लिम–यादव फॉर्मूला चलाते हैं। पिता लालू प्रसाद यादव ने हमेशा मुस्लिम तुष्टिकरण किया। तेजस्वी ने 2025 बिहार विधानसभा चुनाव में दलितों को लुभाया, लेकिन बांग्लादेश? एक ट्वीट भी नहीं। बिहार में 17 प्रतिशत मुस्लिम वोट निर्णायक हैं। तेजस्वी की चुप्पी सामरिक है। वे नागरिकता संशोधन कानून और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर पर मोदी सरकार को घेरते हैं, लेकिन बांग्लादेश के हिंदू शरणार्थियों का मुद्दा इसलिए नहीं छूते कि कहीं मुस्लिम वोट बैंक नाराज हो जाता है। याद कीजिए, जब रोहिंग्या मुसलमानों पर अत्याचार हुआ तो लालू–तेजस्वी ने शोर मचाया। लेकिन हिंदू दलितों पर? चुप्पी। यह पिछड़ों की राजनीति का काला सच है।ये सभी नेता दलित–पिछड़ों को वोट बैंक मानते हैं, लेकिन असली खतरे पर चुप रहते हैं। बांग्लादेश में हिंदू आबादी 20 प्रतिशत से घटकर 8 प्रतिशत रह गई है। दलित हिंदू सबसे कमजोर हैं। भारत सरकार ने शरणार्थियों को आश्रय दिया, लेकिन विपक्ष चुप है। क्यों? क्योंकि मुस्लिम वोट 18 से 20 प्रतिशत है, जो चुनाव का रुख पलट सकता है यह दोहरा मापदंड है। देश में दलित आरक्षण की बात, लेकिन विदेश में दलित हिंदुओं का नरसंहार? अनदेखा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि 2026 के पश्चिम बंगाल और 2027 उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव इन नेताओं की चुप्पी की खास वजह है। दलित संगठन जैसे भीम आर्मी भी मुस्लिम गठबंधन के चक्कर में हैं। बहरहाल, भारतीय जनता पार्टी ने रामदास अठावले जैसे दलित नेताओं के माध्यम से बांग्लादेश मुद्दा उठाया। दलित–पिछड़े नेता अगर मुस्लिम तुष्टिकरण छोड़ें, तो हिंदू दलितों का भला हो सकता है। बांग्लादेश सरकार से जवाब मांगा जाए, शरणार्थियों को नागरिकता संशोधन कानून का लाभ दिया जाए। वरना यह ओछी राजनीति जारी रहेगी। दलितों को समझना होगा कि उनकी पीठ पर चढ़ने वाले ये नेता असल में वोट के भूखे हैं। बांग्लादेश का दर्द उठाओ, तभी सच्ची क्रांति आएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र को समर्पित करेंगे राष्ट्र प्रेरणा स्थल, सभी तैयारियां पूरी

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीन दयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित है, राष्ट्र प्रेरणा स्थल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र नायकों की कांस्य प्रतिमाओं का करेंगे लोकार्पण, 2 लाख से अधिक लोग होंगे साक्षी

राष्ट्रीय चिन्हों और मालाओं से सजाया गया है राष्ट्र प्रेरणा स्थल, सुरक्षा व्यवस्था, ट्रैफिक डायवर्जन और पार्किंग की पूरी तैयारी

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बन कर तैयार भव्य श्राष्ट्र प्रेरणा स्थलश को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र को समर्पित करेंगे। यह स्थल भारतीय राष्ट्रवाद की त्रयी कहे जाने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीन दयाल उपाध्याय और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के विचारों और अमूल्य योगदान को जन–जन तक पहुंचाने का अनुपम प्रयास है। इस संबंध में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस पर भव्य उद्घाटन समारोह के लिए भव्य तैयारियां की गई हैं। इस अवसर पर गणमान्य अतिथियों समेत, 2 लाख से अधिक लोग इस अवसर के साक्षी बनेंगे। सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग, ट्रैफिक डायवर्जन के साथ उद्घाटन समारोह और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की भी सभी तैयारियों को मूर्त रूप दिया जा चुका है। प्रदेश की राजधानी प्रधानमंत्री की उपस्थिति में इस ऐतिहासिक क्षण की साक्षी बनेगी। राष्ट्र नायकों की मूर्तियों के लोकार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करेंगे प्रधानमंत्री राष्ट्र प्रेरणा स्थल के भव्य उद्घाटन समारोह के आयोजन के लिए लखनऊ विकास प्राधिकरण और पर्यटन एवं संस्कृति विभाग ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। राष्ट्र प्रेरणा स्थल के विशाल प्रांगण में फूलों से कमल की आकृति की रंगोली बनाई जा रही हैं। साथ ही प्रेरणा स्थल की बाहरी दीवारों पर कला संस्कृति विभाग की ओर से राष्ट्रीय सांस्कृतिक चिन्हों का अलंकरण किया गया है। राष्ट्र नायकों की प्रतिमाओं के अनावरण का कार्यक्रम 2 बजे अपराह्न शुरू होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट से प्रेरणा स्थल पहुंच कर सबसे पहले राष्ट्र नायकों की मूर्तियों के लोकार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करेंगे। उसके बाद राष्ट्र नायकों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को समर्पित संग्रहालय का उद्घाटन कर, उसका अवलोकन करेंगे। संग्रहालय के ओरिएंटेशन रूम में राष्ट्र नायकों के जीवन पर आधारित वीडियो एवी का प्रदर्शन किया जाएगा। इसके बाद प्रधानमंत्री जनसंबोधन करेंगे, इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और रक्षा

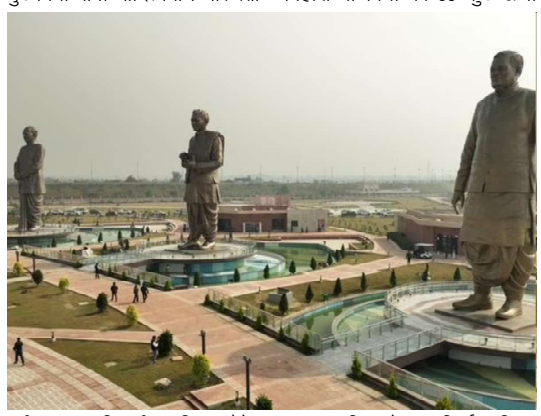

मंत्री राजनाथ सिंह भी उपस्थित रहेंगे। भावी पीढ़ियों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करेगा राष्ट्र प्रेरणा स्थल लखनऊ के वसंत कुंज में राष्ट्र प्रेरणा स्थल को कमल की आकृति में बनाया गया है। प्रेरणा स्थल में राष्ट्रवाद के शिखर पुरुषों डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं दीन दयाल उपाध्याय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 65 फुट ऊंची कांस्य प्रतिमाओं का निर्माण किया गया है। जिनका निर्माण विश्व विख्यात मूर्तिकार राम सुतार और मंटू राम आर्ट क्रिएशंस ने किया है। प्रतिमाओं को फेसेड लाइटिंग और प्रोजेक्शन मैपिंग से सजाया गया है। साथ ही परिसर में राष्ट्र नायकों को समर्पित संग्रहालय का निर्माण भी किया गया है। संग्रहालय की इंटरप्रिटेशन वॉल पर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के म्यूरल आर्ट से देश की राष्ट्रीयता की यात्रा को दर्शाया गया है। संग्रहालय के कोर्टयार्ड में राष्ट्रीय भावना की प्रतीक भारत माता की प्रतिमा स्थापित की गई है। राष्ट्र नायकों को समर्पित गैलरियां उनके जीवन, विचारधारा और संघर्षों को जीवंत बनाती हैं। साथ ही राष्ट्र प्रेरणा स्थल परिसर में सिंथेटिक ट्रैक, मेडिटेशन सेंटर, विपश्यना केंद्र, योग केंद्र, हेलीपैड और कैफेटेरिया का भी निर्माण किया गया है। इसके अलावा परिसर में 3000 की क्षमता वाले एम्फीथिएटर और लगभग 2 लाख की क्षमता के रैली स्थल का भी निर्माण किया गया है। राष्ट्र प्रेरणा स्थल न केवल ऐतिहासिक स्मृति का बिंदु है, बल्कि भावी पीढ़ियों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करेगा।

आल इंडिया बैंक रिटायरीज फेडरेशन (ए.आई.बी.आर.एफ.) ने पेंशन अपग्रेडेशन के लिए किया प्रदर्शन

हमारा पेंशन अपडेशन 30 वर्षों से लंबित– आर.एम.टंडन, महामंत्री

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। पेंशन अपडेशन आदि मुद्दों पर आल इंडिया बैंक रिटायरीज फेडरेशन के 3 लाख से अधिक सदस्य पूरे देश में संघर्ष की राह पर है। इसी क्रम में आज दोपहर केनरा बैंक, अमीनाबाद शाखा के बाहर सैकड़ो बैंक रिटायरीज ने प्रदर्शन किया और उसके बाद बैंक के मुख्य प्रबंधक को एक ज्ञापन दिया। महामंत्री राम मोहन टंडन ने बताया प्रदेश के सभी जिलों में पेंशन अपडेशन, आई. बी.ए. से सीधे वार्ता का हक, मेडिकल इंश्योरेंस प्रीमियम में जीएसटी जीरो, 2012 के बाद सेवानिवृत पेंशनर्स को स्पेशल अलाउंस पर पेंशन की गणना आदि मुद्दों पर आंदोलन चल रहा है, उन्होंने बताया हमारा पेंशन अपडेशन 30 वर्षों से लंबित है, कई सरकारें आईं किसी ने हमारे बारे में नहीं सोचा। प्रदर्शन का संचालन वीके श्रीवास्तव ने किया तथा आर.एम.टंडन, आर के अग्रवाल, आर के धवन, स्वर्णकार, अनूप शरण सिंह, विनय श्रीवास्तव, संजय श्रीवास्तवा आदि वरिष्ठ बैंक नेताओं ने प्रदर्शन में अपने विचार व्यक्त किए। अनिल तिवारी, मीडिया प्रभारी ने बताया 30 दिसंबर को पीएनबी, विवेक खंड एवं 5 जनवरी को यूनियन बैंक, कपूरथला तथा 10 जनवरी को लगभग 70 वर्षीय रिटायरीज पूरे दिन की भूख हड़ताल करेंगे।

आरक्षण पर भाजपा के पिछड़े और दलित नेताओ की चुप्पी खतरनाक है और आत्मघाती है- डॉ सी पी राय

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में हालिया लेखपाल भर्ती में आरक्षण नियमों का घोर उल्लंघन सामने आया है। यूपी0एस0एस0एस0सी0 द्वारा जारी 7994 पदों के विज्ञापन में ओ0बी0सी0 को 27 प्रतिशत के स्थान पर मात्र 1441 पद (लगभग 18 प्रतिशत) ही दिए गए, जिससे करीब 717 ओ0बी0सी0 पदों की हकमारी हुई। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के चेयरमैन, पूर्व मंत्री डॉ0 सी0पी0 राय ने कहा कि एस सी को 1446 और एस टी को 150 पद मिले, जबकि सामान्य वर्ग को 4165 पद आवंटित किए गए। यह आरक्षण घोटाला भाजपा सरकार की पिछड़े–दलित विरोधी नीतियों को उजागर करता है। इसी तरह, उच्च शिक्षा में भी हालत बदतर है। केंद्रीय विश्वविद्यालयों में ओ0बी0सी0 के 66.8 प्रतिशत, एस0सी0 के 54.4 प्रतिशत और एस0टी0 के 58 प्रतिशत आरक्षित शिक्षक पद खाली पड़े हैं। प्रदेश के कॉलेजों–विश्वविद्यालयों में रोस्टर का पालन नहीं हो रहा, बैकलॉग पद जानबूझकर रिक्त रखे जा रहे हैं। डा0 राय ने कहा कि पहले की 69,000 सहायक शिक्षक भर्ती में भी ओ0बी0सी0 को 27 प्रतिशत की जगह मात्र 3.86 प्रतिशत और एस सी को 21 प्रतिशत की जगह 16.6 प्रतिशत आरक्षण मिला था, जिसमें 19,000 सीटों पर घोटाला साबित हुआ। डॉ0 राय ने कहा कि भाजपा को समर्थन देने वाले राजभर, निषाद समाज के नेता और जयंत चौधरी तथा भाजपा के पिछड़े वर्ग के मंत्री–विधायक इस अन्याय पर पूरी तरह चुप हैं। सत्ता के लालच में वे अपने समाज को धोखा दे रहे हैं। देश का पिछड़ा और दलित वर्ग इस विश्वासघात को नहीं भूलेगा। चुनाव में भाजपा और इन नेताओं से इस अन्याय का हिसाब लिया जाएगा। कांग्रेस पिछड़े–दलितों के हक की लड़ाई में डटी रहेगी।

बीजेपी के नाराज ब्राह्मण विधायकों को साथ लाएगी सपा !

अखिलेश के चाचा शिवपाल सिंह यादव का खाद प्लान

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ में बीजेपी के 40 से ज्यादा विधायकों ने सहभोज के बहाने बैठक की, जिसके बाद प्रदेश

में सियासी हलचलें तेज हो गई हैं। बीजेपी विधायकों की इस बैठक पर समाजवादी पार्टी के महासचिव और अखिलेश यादव के चाचा शिवपाल सिंह यादव ने तंज कसा और कहा कि उन्हें सपा के साथ आ जाना चाहिए। शिवपाल यादव ने ब्राह्मण विधायकों की बैठक के पीछे पार्टी में पनपते असंतोष को वजह बताया और कहा कि ये बैठक इसलिए हो रही है क्योंकि भाजपा में उन्हें सम्मान नहीं मिल रहा है।शिवपाल यादव ने इसे लेकर भारत समाचार से बात की और बीजेपी विधायकों को बीजेपी के साथ आने का न्योता दिया।शिवपाल ने कहा, भारतीय जनता पार्टी के लोग जातिवाद फैलाते है। ब्राह्मण समाज के लोग अलग से बैठक कर रहे हैं तो हम ये कहेंगे कि सब लोग हमारी समाजवादी पार्टी में आ जाएं उन्हें पूरी तरह से यहां सम्मान मिलेगा । उनकी सरकार से कोई न कोई तो नाराजगी होगी इसलिए वो अलग–अलग बैठक कर रहे हैं।बीजेपी में जातिवाद है इसलिए तो वो लोग नाराज हैं लेकिन हम तो समाजवादी लोग है वो हमारे साथ आएं उन्हें पूरा सम्मान दिया जाएगा सपा विधायक अतुल प्रधान ने कहा कि ये सिर्फ ब्राह्मणों की बात नहीं है। सब लोग इस सरकार से नाराज है दूसरे समुदाय के लोग एकसाथ आने लगे हैं।ब्राह्मण विधायकों ने बीजेपी को हराने के लिए बैठक की है।मंगलवार रात को लखनऊ में कुशीनगर से बीजेपी विधायक पीएन पाठक के आवास पर सहभोज के बहाने ब्राह्मण विधायकों ने बैठक की। सूत्रों के मुताबिक इस बैठक में अफसरों की मनमानी और ब्राह्मणों की अनदेखी को लेकर नाराजगी जताई गई।

संक्षिप्त

निजी स्कूलों की मनमानी के खिलाफ राष्ट्रीय छात्र पंचायत का प्रदर्शन

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में निजी स्कूलों द्वारा ड्रेस और किताबों के नाम पर अभिभावकों से किए जा रहे कथित शोषण के विरोध में राष्ट्रीय छात्र पंचायत ने बुधवार को अनोखा प्रदर्शन किया। बुधवार दोपहर राजधानी लखनऊ में हजरतगंज स्थित दारुल सफा, गेट नंबर–2 के पास विधायक निवास पर छात्र पंचायत के कार्यकर्ताओं ने सिर मुंडवाकर सरकार और जनप्रतिनिधियों का ध्यान इस मुद्दे की ओर खींचने की कोशिश की। इस दौरान राष्ट्रीय छात्र पंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवम पांडेय ने कहा कि उत्तर प्रदेश में निजी स्कूल हर साल ड्रेस और किताबों के नाम पर अभिभावकों का आर्थिक शोषण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कड़ाके की ठंड में सिर मुंडवाना इस बात का प्रतीक है कि छात्र संगठन अब अपने हक के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। शिवम पांडेय ने बताया कि इससे पहले नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय सहित प्रदेश के सभी 403 विधायकों को बादाम देकर और पत्र लिखकर इस मुद्दे को सदन में उठाने का अनुरोध किया गया था, लेकिन अब तक किसी भी जनप्रतिनिधि ने छात्रों की आवाज नहीं उठाई। राष्ट्रीय छात्र पंचायत के अमन बहादुर सिंह ने बताया कि संगठन की ओर से मुख्यमंत्री को एक लाख से अधिक पत्र भेजे जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि खून से लिखे गए पत्र भी भेजे गए और कई जनपदों में प्रदर्शन किए गए। अमन बहादुर सिंह के अनुसार, मुख्यमंत्री आवास पर प्रदर्शन के दौरान उन्हें आश्वासन दिया गया था कि 15 दिनों के भीतर मुख्यमंत्री से मुलाकात कराकर इस मुद्दे से जुड़े बिल को सदन में लाया जाएगा, लेकिन अब तक सिर्फ आश्वासन ही मिला है। छात्र पंचायत के नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर जल्द कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

वीएचआरपी का जोरदार हंगामा, बांग्लादेश के राष्ट्रपति की तस्वीर जलाई, जूतों से रौंदा

संवाददाता, लखनऊ। राजधानी लखनऊ में विश्व हिंदू रक्षा परिषद ने आज जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। बांग्लादेश के राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन की तस्वीर जलाई। उनकी तस्वीर को जूतों से रौंदा। प्रधानमंत्री से बांग्लादेश में हो रहीं हिंदुओं की हत्याओं को रोकने की दिशा में कड़ा कदम उठाने की मांग की। केजीएमयू में धर्मांतरण के आरोपी डॉ. रमीजुद्दीन नायक उर्फ रमीज का भी जमकर विरोध किया। उसे फांसी देने की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने बांग्लादेश मुर्दाबाद, लव जिहाद मुर्दाबाद के नारे लगाए। राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल राय ने कहा कि बांग्लादेश में अब तक हजारों अल्पसंख्यकों की हत्या हो चुकी है, जिसमें विशेष रूप से हिंदू ज्यादा हैं। हमारे मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। समाज के लोगों को धर्म के आधार पर हत्या की जा रही है, जो बेहद शर्मनाक है। वहां नाम पूछ कर हिंदुओं को मारा जा रहा है। दीपू दास ने बस इतना ही कहा था कि सबका मालिक ईश्वर है और उसे मौत के घाट उतार दिया गया। गोपाल राय ने कहा बांग्लादेश में जो हत्यारोपी हैं, उन्हें सरकार कोई सजा नहीं दे रही है। संरक्षण दे रही है। हमारी मांग है कि जितने भी हिंदू बांग्लादेश में है उन्हें भारत लाया जाए, फिर भारत लाइसेंसी शस्त्रधारी हिंदू हैं उन्हें बांग्लादेश भेजा जाए। हमारी मांगों पर विचार नहीं हुआ तो 30 दिसंबर को संसद भवन का दिल्ली में घेराव करेंगे।

एक पेड़ मां के नाम, पूरा जंगल अडानी के नाम,मोदी-बुलडोजर की तस्वीर संग तंज

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में कांग्रेस मुख्यालय के बाहर होर्डिंग लगाकर अरावली पर्वत श्रृंखला मामले में सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरा गया है। होर्डिंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गौतम अडानी के साथ तस्वीर दिखाई गई है। बुल्डोजर से पहाड़ों और पेड़ों को काटने का दृश्य दिखाया गया है। होर्डिंग एनएसयूआई ईस्ट के महासचिव आदित्य शुक्ला ने लगवाया है। अरावली मामले को लेकर विपक्ष लगातार अडानी और केंद्र सरकार सरकार पर हमलावर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर लगातार निशान साध रही है। इसी कड़ी में लखनऊ में यह होर्डिंग लगी है। होर्डिंग में लिखा है–एक पेड़ मां के नाम, पूरा जंगल अडानी के नाम। एक पेड़ दिखाकर वोट लिया, पूरा जंगल अडानी को दे दिया। बचा लो अरावली वरना सांस भी बिकेगी। आदित्य शुक्ला ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम लगवाकर हमें गुमराह किया गया। पूरा जंगल अडानी को दे दिया गया। यह सरकार लगातार एक पेड़ लगाकर खूब प्रचार करती है और जंगल के जंगल अडानी को दे देती है। जब बड़े–बड़े जंगल अडानी के हाथों बिक जाते हैं, तब कोई प्रचार नहीं होता। आज पूरे देश के लोग यह मांग कर रहे हैं कि अरावली को बचाया जाए, मगर प्रधानमंत्री के कान में जूं नहीं रेंग रही है। आम जनता सड़कों पर उतर रही है। आंदोलन कर रही है, मगर फिर भी कोई सुनवाई नहीं हो रही। हम लोगों ने लखनऊ में होर्डिंग के माध्यम से अरावली को बचाने का संदेश दिया है। अरावली को बचाना हमारा धर्म और कर्तव्य है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि अडानी को 99 मीटर तक सभी पर्वत काटने की अनुमति मिली है। 93: जो पर्वत है वह 99 मीटर ही है, तो यह सीधे तौर पर पूरे अरावली को साफ करने का आदेश है। हमारा संदेश बिल्कुल साफ है जब तक हम इस अरावली को बचा नहीं लेंगे तब तक यह लड़ाई लड़ते रहेंगे।

शीतकालीन सत्र का आखरी दिन, बोले सीएम योगी–हम विपक्ष के सुझावों को गंभीरता से लेते हैं

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल का शीतकालीन सत्र बुधवार को भी गहमागहमी भरा रहा। अनुपूरक बजट से लेकर प्रदूषण और अरावली बचाओ मुद्दे तक विपक्ष ने सरकार को घेरने की पूरी कोशिश की, जबकि सत्ता पक्ष ने पलटवार किया। अपना दल (एस) के नेता और यूपी के प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल ने योगी सरकार द्वारा पेश किए गए 24,497 करोड़ रुपये के अनुपूरक बजट की तारीफ की।

उत्तर प्रदेश में महिला उद्यमिता को मिला रहा मजबूत आधार

योगी सरकार का लक्ष्य : यूपी उद्यम शक्ति का केंद्र बनाना टियर 2 और टियर 3 शहरों में उद्यमिता का हो रहा है विस्तार

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने साढ़े आठ वर्षों में प्रदेश के विकास को नई दिशा और गति दी है। कानून–व्यवस्था के साथ–साथ सरकार का फोकस नवाचार उद्यमिता और आत्मनिर्भरता पर है। इसी सोच के अनुरूप केंद्र सरकार की निधि योजना का प्रभाव उत्तर प्रदेश में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्टअप्स खासकर महिला नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए प्रदेश में एक सकारात्मक , भरोसेमंद वातावरण तैयार हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार का लक्ष्य उत्तर प्रदेश को केवल श्रम शक्ति का नहीं बल्कि उद्यम शक्ति का केंद्र बनाना है।निधि कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2016 में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा की गई थी। इस योजना का उद्देश्य प्रारंभिक चरण के विज्ञान एवं तकनीक आधारित स्टार्टअप्स को वित्तीय और संस्थागत सहायता देना है। योजना के अंतर्गत देश में कुल 714 महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स सहायता दी जा चुकी है। वर्ष 2017–18 में 23 महिला स्टार्टअप्स को सहायता मिली, वर्ष 2023–24 में 152, 2024–25 में 140 और वर्ष 2025–26 में 84 महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को समर्थन दिया गया। देश भर में सहयोग प्राप्त हुआ है। यह इस बात का संकेत है कि प्रदेश की महिलाएं अब केवल रोजगार की तलाश में नहीं हैं बल्कि रोजगार देने वाली उद्यमी बनने की दिशा में आगे कदम बढ़ा रही है। योगी सरकार की स्टार्टअप नीति और महिला

महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को शुरुआती स्तर पर सहायता दी जा रही है। इस राष्ट्रीय पहल में उत्तर प्रदेश ने भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। प्रदेश में 25 महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को निधि योजना के तहत वित्तीय और तकनीकी सशक्तिकरण से जुड़ी योजनाओं ने इस बदलाव को गति दी है।उत्तर प्रदेश में निधि प्रौद्योगिकी व्यापार इनक्यूबेटर टीबीआई और समावेशी प्रौद्योगिकी व्यापार इनक्यूबेटर आईटीबीआई की स्थापना योगी सरकार के विकास मॉडल की बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। प्रदेश में 7 टीबीआई और आईटीबीआई स्थापित किए गए हैं, जो महिला स्टार्टअप्स के लिए मार्गदर्शन का केंद्र बन रहे हैं। इन इनक्यूबेटरों के माध्यम से महिलाओं को तकनीकी सलाह, व्यवसायिक रणनीति, बौद्धिक संपदा अधिकार, कानूनी और नियामक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इसका लाभ यह हुआ है कि छोटे शहरों और कस्बों की महिलाएं भी अब नवाचार आधारित उद्यम शुरू करने का साहस कर पा रही हैं, यह योगी आदित्यनाथ सरकार के विजन से ही संभव हो पा रहा है। मुख्यमंत्री का विजन है कि विकास केवल बड़े शहरों तक सीमित न रहे। इसी सोच के अंतर्गत टियर वन और टियर टू स्तर के शहरों में स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के कई ऐसे जिले जो पहले उद्यमिता के मानचित्र पर नहीं थे, अब धीरे–धीरे स्टार्टअप गतिविधियों के केंद्र बन रहे हैं। निधि योजना से जुड़े इनक्यूबेटर इन क्षेत्रों में स्थानीय महिलाओं को प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध करा रहे हैं। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है।

यूपी : हाईकोर्ट ने शूटर वर्तिका सिंह के खिलाफ जालसाजी का केस किया रद्द, स्मृति ईरानी से जुड़ा है पूरा मामला

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने अंतरराष्ट्रीय शूटर और राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित वर्तिका सिंह के खिलाफ दर्ज जालसाजी और मानहानि से जुड़े आपराधिक केस को रद्द कर दिया। अदालत ने कहा कि इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं है कि वर्तिका सिंह ने प्रधानमंत्री कार्यालय या तत्कालीन केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के कार्यालय के नाम से कथित पत्रों की जालसाजी की थी। न्यायमूर्ति राजीव सिंह की एकल पीठ ने कहा कि पुलिस द्वारा लगाए गए आरोप महज अनुमान पर आधारित हैं और रिकॉर्ड पर ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है, जिससे यह साबित हो सके कि कथित फर्जी दस्तावेज वर्तिका सिंह द्वारा तैयार किए गए। अभियोजन के अनुसार कथित घटना वर्ष 2020 की है, जब वर्तिका सिंह ने दावा किया कि उनसे अप्रैल 2020 में रजनीश सिंह नामक व्यक्ति ने संपर्क किया था। उसने खुद को भाजपा का सक्रिय नेता

और तत्कालीन केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी का करीबी बताया था। आरोप था कि राजनीश सिंह ने वर्तिका को राष्ट्रीय महिला आयोग का सदस्य बनाए जाने का झांसा दिया और व्हाट्सएप के जरिये कुछ दस्तावेज भेजे, जिनमें स्मृति ईरानी द्वारा प्रधानमंत्री को भेजे गए कथित अनुशंसा पत्र भी शामिल थे।वर्तिका सिंह के अनुसार नवंबर 2020 में रजनीश सिंह ने नियुक्ति को अंतिम रूप देने के लिए उनसे 25 लाख रुपये की रिश्वत की मांग की। रिश्वत देने से इनकार करने के बाद वर्तिका सिंह ने कथित धोखाधड़ी को उजागर करने का प्रयास किया और दस्तावेजों की सत्यता की जांच तथा रिश्वत की मांग की शिकायत लेकर संबंधित अधिकारियों से संपर्क किया। वर्तिका सिंह के खिलाफ दर्ज कराई गई एफ आई आर में आरोप लगाया गया था कि वर्तिका सिंह ने रजनीश सिंह को बदनाम करने के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार किए।

अमेठी के मुसाफिरखाना थाने में वर्ष 2020 में दर्ज इस एफआईआर को चुनौती देते हुए वर्तिका सिंह ने 2022 में हाईकोर्ट में यह याचिका दाखिल की थी। उन्होंने दलील दी कि वह स्वयं धोखाधड़ी की शिकार हैं और जांच अधिकारी ने बिना ठोस साक्ष्य के यांत्रिक तरीके से आरोप पत्र दाखिल कर दिया। हाईकोर्ट ने केस डायरी, रिकॉर्ड और पक्षकारों की दलीलों पर गौर करते हुए कहा कि उपलब्ध सामग्री में वर्तिका सिंह के खिलाफ जालसाजी या धोखाधड़ी का कोई प्रमाण नहीं है। इस टिप्पणी के साथ कोर्ट ने वर्तिका के खिलाफ अपराधिक केस की पूरी कार्यवाही रद्द करके याचिका मंजूर कर ली।

दिव्यांगों को नहीं मिला कंबल, मलिहाबाद तहसील में किया प्रदर्शन

संवाददाता

लखनऊ। मलिहाबाद में कड़ाके की ठंड के बीच कंबल न मिलने से नाराज दिव्यांगों ने प्रदर्शन किया। उन्होंने स्थानीय प्रशासन से तत्काल कंबल वितरण की मांग की है। इससे पहले 19 दिसंबर को दिव्यांग विकास सोसाइटी मोर्चा के जिलाध्यक्ष ने उपजिलाधिकारी मलिहाबाद को ज्ञापन सौंपा था। ज्ञापन में सैकड़ों दिव्यांगों के लिए कंबल वितरण की मांग की गई थी। जिस पर एसडीएम ने जल्द वितरण का आश्वासन दिया था। आश्वासन के बावजूद अब तक कंबल वितरित नहीं किए गए हैं, जिससे दिव्यांगों में भारी नाराजगी है। इसी क्रम में बुधवार को दिव्यांग विकास सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत के नेतृत्व में संगठन के पदाधिकारी अनिल कन्नौजिया और विमल राठौर सहित लगभग सौ दिव्यांग मलिहाबाद तहसील परिसर पहुंचे। इस दौरान सैदापुर निवासी छोटेलाल, अमानीगंज से सुरेश, तरौना से त्रेता, मलिहाबाद से हेमराज और लघौसी से अवधेश यादव समेत बड़ी

ग्रामीण समृद्धि की धुरी बनेगी सहकारी समितियां: डॉ. धन सिंह रावत

प्रत्येक ग्राम सभाओं में होगी स्थापित, सहकारिता आंदोलन को मिलेगा बल
सहकारिता के माध्यम से स्टार्टअप व आधुनिक व्यवसायों से जुड़ेंगे युवा

बीएनई

देहरादून। सूबे की प्रत्येक ग्राम सभाओं में सहकारी समितियों की स्थापना की जायेगी। इन समितियों के जरिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जायेगा, साथ ही इन्हें ग्रामीण समृद्धि की धुरी बनाया जायेगा। सहकारिता के माध्यम से अबतक प्रदेशभर के 11.50 लाख किसानों एवं स्वयं सहायता समूहें को 7000 करोड़ से अधिक ब्याज मुक्त ऋण वितरित किया जा चुका है, जिससे लाभार्थियों की आर्थिकी को विस्तार मिला। इसके

अलावा राज्य व जिला सहकारी बैंकों की कार्यप्रणाली में व्यापक सुधार किया गया, जिससे बैंकों का एनपीए कम हुआ और बैंक डिपोजिट में खासी वृद्धि हुई। यह बात सूबे के सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने आज देहरादून के रेंजर्स ग्राउंड में सहकारिता विभाग द्वारा आयोजित सहकारिता मेले में बतौर मुख्य अतिथि कही। डॉ. रावत ने कहा कि राज्य सरकार ने 'सशक्त उत्तराखंड' का संकल्प लिया है। अग्रणी उत्तराखंड के ध्येय वाक्य के तहत संकल्प से सिद्धि के लिये सहकारिता में बहुआयामी कार्ययोजनाओं का काम किया जा रहा है, जिसके सुखद परिणाम भी सामने आ रहे हैं। डॉ. रावत ने कहा कि राज्य सरकार ग्रामसभा स्तर पर सहकारी समितियों की स्थापना कर रही है ताकि प्रत्येक व्यक्ति को सहकारिता से लाभान्वित किया जा सके। इसके योजना के तहत वर्तमान में 602 से अधिक नई एमपीएसीएस, 258 डेयरी समितियां तथा 119 मत्स्य समितियों का गठन किया जा चुका है। युवाओं को स्टार्टअप, ऑग्रेनिक उत्पादों की मार्केटिंग एवं प्रोसेसिंग जैसे आधुनिक

व्यवसायों से जोड़ने का कार्य भी सहकारिता के माध्यम से किया जा रहा है। सहकारिता का यह विस्तार न सिर्फ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा बल्कि ग्रामीण समृद्धि की धुरी भी बनेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेशभर में 670 एमपैक्स जनसुविधा केन्द्र तथा 23 एमपैक्स जन औषधि केन्द्र के रूप में कार्य कर आम लोगों को लाभान्वित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन एमपैक्स को ई–पैक्स बनाया जा रहा है ताकि आम लोगों को ई–सेवाओं का लाभ मिल सके। डॉ. रावत ने अपने सम्बोधन में कहा कि सहकारिता विभाग के तहत संचालित दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना का लाभ प्रदेश के किसान, काश्तकार, कारीगर और स्वयं सहायता समूह बखूबी उठा रहे हैं। अब तक सरकार ने 11.50 लाख से अधिक लाभार्थियों को रूपये 7000 करोड़ से अधिक ब्याज मुक्त ऋण वितरित कर दिया है, जो कि अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। डॉ. रावत ने कहा कि राज्य एवं जिला सहकारी बैंकों का कायाकल्प किया जा रहा है, वर्तमान में सहकारी बैंक अपने खाताधारकों को राष्ट्रीयकृत बैंकों की भांति आधुनिक व डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे खाताधारकों का विश्वास बैंकों पर बढ़ा है। जिसके चलते वित्तीय वर्ष 2024–25 में रूपये 15651 करोड़ से अधिक का निक्षेप संचय बैंकों में हुआ है साथ ही सहकारी बैंकों का एनपीए भी कम हुआ है। वर्तमान में राज्यके समस्त 10 जिला सहकारी बैंक एवं 01 राज्य सहकारी बैंक लाभ पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. रावत ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का जो एतिहासिक निर्णय लिया था, वह कारगर साबित हुआ और सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। उन्होंने बताया कि हाल ही में हुये सहकारी समितियों के निर्वाचन में 668 समितियों में से 280 से अधिक समितियों में महिलाएं अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुई, जो महिला सशक्तिकरण का एक अनुपम उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सरकार सहकारिता को आंदोलन के रूप में घर–घर तक पहुंचाने का काम कर रही है। इस अवसर पर सहकारिता मंत्री ने योजनाओं के लाभार्थियों को चेक भी वितरित किये। इस अवसर पर दर्जा राज्य मंत्री गीताराम गौड़, निवर्तमान चौयरमैन, जिला सहकारी बैंक टिहरी सुभाष रमोला, अपर निबंधक इरा उप्रेती, आनंद शुक्ला सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्तर पर जांच सेवाओं में उत्कृष्ट योगदान के लिए डिटेक्टिव देव सम्मानित

देवव्रत पुरी गोस्वामी को मिला "संस्थापक चयन सम्मान 2025"

बीएनई

देहरादून। भारत में पेशेवर, विश्वसनीय एवं कानूनी जांच सेवाओं के क्षेत्र में एक सशक्त राष्ट्रीय पहचान बना चुके देवव्रत पुरी गोस्वामी (डिटेक्टिव देव), संस्थापक तियानझू इन्वेस्टिगेटिव सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, को यूएनएचयू संस्थापक सम्मेलन 2025 के अवसर पर "संस्थापक चयन सम्मान 2025" से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें पूरे भारत में एक संगठित, अनुशासित एवं मजबूत जांच नेटवर्क स्थापित करने, तथा कानूनी रूप से मान्य, पूर्ण गोपनीय और उच्च–स्तरीय जांच सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रदान किया गया। यह सम्मान देश के जाने–माने फिल्म निर्देशक, निर्माता एवं लेखक अभिषेक दुहाडिया द्वारा देहरादून के चकराता रोड स्थित एक होटल में प्रदान किया गया। अभिषेक दुहाडिया भारतीय फिल्म उद्योग का एक प्रतिष्ठित नाम हैं तथा अजय देवगन, संजय दत्त एवं सोनाक्षी सिन्हा जैसे चर्चित कलाकारों से सजी फिल्म "भुज" के निर्माता, निर्देशक एवं लेखक रह चुके हैं। उनके द्वारा प्रदान किया गया यह सम्मान डिटेक्टिव देव के कार्य की राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता, विश्वसनीयता और प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। पूरे भारत में फैला सशक्त जांच नेटवर्क, डिटेक्टिव देव के नेतृत्व में तियानझू इन्वेस्टिगेटिव सर्विसेज आज भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरों और राज्यों में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। एजेंसी द्वारा की गई जांच सेवाएं विशेष रूप से, विवाह–पूर्व

जांच, विवाह–पश्चात जांच, कॉरपोरेट धोखाधड़ी, चरित्र सत्यापन, निगरानी एवं संवेदनशील मामलों में अत्यंत प्रभावशाली और परिणामोन्मुख मानी जाती हैं। न्यायालय में स्वीकार्य जांच रिपोर्ट – सबसे बड़ी पहचान, डिटेक्टिव देव की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उनकी टीम द्वारा तैयार की गई जांच रिपोर्टें एवं प्रस्तुत साक्ष्य देश की विभिन्न अदालतों में स्वीकार किए गए हैं। प्रत्येक जांच प्रक्रिया पूर्णतः कानूनी दायरे, नैतिक मानकों एवं व्यावसायिक दस्तावेज़ीकरण के अंतर्गत संपन्न की जाती है, जिससे रिपोर्टों की प्रमाणिकता और विश्वसनीयता बनी रहती है। सम्मान प्राप्ति पर डिटेक्टिव देव कहते हैं, "यह सम्मान केवल मेरा नहीं है, बल्कि मेरी पूरी टीम और उन सभी लोगों के विश्वास का प्रतीक है, जिन्होंने हम पर भरोसा किया। हमारा उद्देश्य सदैव सत्य तक पहुँचना और न्यायिक प्रक्रिया को सशक्त बनाना रहा है।" यह सम्मान न केवल डिटेक्टिव देव की व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि भारत में पेशेवर जांच सेवाओं के बढ़ते मानकों, विश्वसनीयता और विश्वास का भी सशक्त प्रमाण है।

एसजेवीएन ने राजस्थान में 1000 मेगावाट बीकानेर सौर ऊर्जा परियोजना की सीओडी को हासिल किया

बीएनई

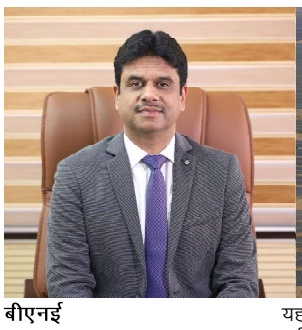

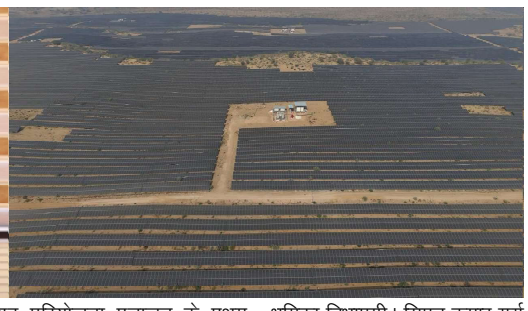

शिमला। भूपेंद्र गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एसजेवीएन ने अवगत कराया है कि एसजेवीएन ने आज राजस्थान के 1000 मेगावाट क्षमता वाले बीकानेर सौर ऊर्जा परियोजना की वाणिज्यिक संचालन तिथि (सीओडी) सफलतापूर्वक हासिल की है। यह उपलब्धि देश की विद्युत उत्पादन क्षमता को सुदृढ़ करने की दिशा में कंपनी की यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है। गुप्ता ने इस शानदार उपलब्धि के लिए सभी कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता न सिर्फ एसजेवीएन की तकनीकी उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है, अपितु कर्मचारियों, ठेकेदारों और सभी स्टेकहोल्डर्स के समर्पण और समन्वित प्रयासों को भी दर्शाती है। गुप्ता ने आगे बताया कि 1000 मेगावाट बीकानेर सौर ऊर्जा परियोजना राजस्थान के बीकानेर जिले में अवस्थित है और इसे एसजेवीएन अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अधीनस्थ कंपनी एसजेवीएन ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एसजीईएल) के माध्यम से कार्यान्वित कर रहा है। यह परियोजना प्रचालन के प्रथम वर्ष में 2,454.55 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पन्न करेगी और 25 वर्षों में कुल मिलाकर लगभग 56,838 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पन्न करेगी। अधिकतम उपयोग शुल्क ६2.57 प्रति यूनिट तय किया गया है, जिससे उपभोक्ताओं को सस्ती ग्रीन ऊर्जा उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। इस परियोजना से उत्पन्न होने वाली सौर ऊर्जा की राजस्थान, जम्मू एवं कश्मीर और उत्तराखंड राज्यों को आपूर्ति की जाएगी। अजय कुमार शर्मा, निदेशक (कार्मिक) ने इसमें शामिल सभी कार्मिकों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और बताया कि यह परियोजना राजस्थान के बीकानेर ज़िले में बांदरवाला गांव के समीप पूर्ण रूप से खरीदी गई 5,000 एकड़ भूमि पर बनाई गई है। यह देश के सबसे ज़्यादा सोलर एनर्जी वाले इलाकों में से एक है। उन्होंने आगे कहा कि इस परियोजना की कमीशनिंग से भारत सरकार के वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। सिपन कुमार गर्ग निदेशक (वित्त) एसजेवीएन ने कहा कि यह परियोजना 5,492 करोड़ की लागत से बनाई गई है और इसे डोमेस्टिक कंटेंट रिक्वायरमेंट (डीसीआर) मोड के तहत पूरा किया गया है, जिसमें देश में बने सोलर फोटोवोल्टिक सेल और मॉड्यूल का इस्तेमाल किया गया है, जिससे मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा मिला है। ग्रिड को स्वच्छ ऊर्जा देने के अलावा, इस परियोजना से अनुमानित 27,85,077 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी। इससे पूर्व, भारत की माननीय राष्ट्रपति, द्रौपदी मुर्मू ने दिनांक 3 जनवरी 2023 को जयपुर, राजस्थान में इस परियोजना की आधारशिला रखी थी। 1000 मेगावाट की बीकानेर सौर ऊर्जा परियोजना को भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) की केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (सीपीएसयू) योजना – फेस II, ट्रेंच III के तहत विकसित किया गया है। डीसीआर मोड के तहत लागू होने से स्वदेशी सौर विनिर्माण इकोसिस्टम को और अधिक बढ़ावा मिलने की संभावना है।

संक्षिप्त

डेटा एम्बेसी और Data सिटी से भारत कैसे बन सकता है दुनिया का बड़ा डिजिटल हब? रिपोर्ट में दिया गया सुझाव

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के पास वैश्विक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर इनोवेशन में अग्रणी भूमिका निभाने का बड़ा अवसर है। पीडब्ल्यूसी की एक नई रिपोर्ट के मुताबिक, अगर भारत डेटा एम्बेसी और डेटा सिटी जैसे उभरते मॉडल अपनाता है, तो वह दुनिया के लिए एक भरोसेमंद डिजिटल केंद्र बन सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों को श्डेटा एम्बेसीश जैसी व्यवस्था की पेशकश कर सकता है। इस मॉडल के तहत टैक्स–न्यूट्रल जोन, संप्रभु प्रतिरक्षा से जुड़े ढांचे और मजबूत साइबर सुरक्षा गारंटी जरूरी होंगी। ऐसा करने से भारत अन्य देशों के अहम डिजिटल डेटा को सुरक्षित रूप से होस्ट करने वाला भरोसेमंद देश बन सकता है। डेटा सिटी का प्रस्ताव पीडब्लूसी ने रिपोर्ट में डेटा सिटी विकसित करने का भी सुझाव दिया है।

रमिता-हिमांशु का शानदार प्रदर्शन, मिश्रित टीम स्पर्धा में जीता स्वर्ण

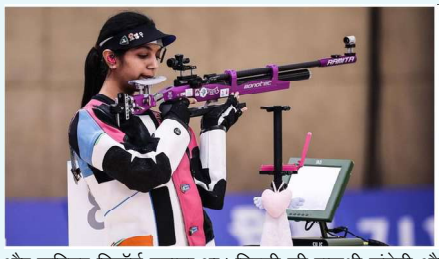

एजेंसी

भोपाल। हरियाणा की रमिता जिंदल और हिमांशु ढिल्लों ने मंगलवार को भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय निशानेबाजी चौंपियनशिप में महाराष्ट्र की आर्य बोरसे और पार्थ माने की जोड़ी को 16–12 से हराकर 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस जीत के साथ ही ढिल्लों का दबदबा कायम रहा, जिन्होंने सोमवार को पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में 634.5 का राष्ट्रीय और जूनियर रिकॉर्ड बनाया था। दिल्ली की राजश्री संचेती और पार्थ मखीजा ने मध्य प्रदेश की श्रेया अग्रवाल और ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर की जोड़ी के खिलाफ 17–15 की जीत के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया।

छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण का नया युग

आगामी वर्ष 'महतारी गौरव वर्ष' घोषित
महिला विकास की नई इबारत लिख रही है साय सरकार

बीएनई

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार ने मातृशक्ति के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए आगामी वर्ष को 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के लक्ष्य के अनुरूप छत्तीसगढ़ सरकार नित–नये फैसले ले रही है। विकसित छत्तीसगढ़ के लिए छत्तीसगढ़ अंजोर विजन 2047 तैयार किया गया है। विकसित छत्तीसगढ़ में महिलाओं की सशक्त भागीदारी को देखते हुए राज्य में आगामी वर्ष को महतारी गौरव वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि 'महतारी गौरव वर्ष' में महिलाओं के सशक्तिकरण, सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक गरिमा को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सशक्त संकल्प सिद्ध होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह वर्ष छत्तीसगढ़ में मातृशक्ति के नेतृत्व, सहभागिता और सम्मान का एक नया अध्याय लिखेगा, जो विकसित, समरस और सशक्त छत्तीसगढ़ की मजबूत नींव बनेगा। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि सरकार को सबसे बड़ा आशीर्वाद माताओं और बहनों से प्राप्त होता है। उनके विश्वास, समर्थन और आशीष से ही जनसेवा के कार्यों को नई ऊर्जा और दिशा मिलती है। इसी भावनात्मक और सामाजिक दायित्वबोध से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने यह ऐतिहासिक

निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में सेवा का पहला वर्ष 'विश्वास वर्ष' के रूप में समर्पित रहा, जिसमें शासन और जनता के बीच भरोसे की पुनर्स्थापना हुई। दूसरा वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को समर्पित 'अटल निर्माण वर्ष' के रूप में मनाया गया, जिसके दौरान आधारभूत ढांचे के सुदृढ़ीकरण, सामाजिक विकास और जनकल्याण से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण कार्य पूरे हुए। अब सेवा का आगामी वर्ष मातृशक्ति को समर्पित 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में मनाया जाएगा, जिसमें राज्य की सभी प्रमुख योजनाओं और कार्यक्रमों का केंद्रबिंदु माताएँ और बहनें होंगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में बीते दो वर्षों में महिला सशक्तिकरण को केंद्र में रखकर किए गए कार्यों ने छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय पटल पर एक आदर्श मॉडल के रूप में स्थापित किया है। सरकार ने महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और निर्णय क्षमता को अपनी नीतियों का मूल आधार बनाते हुए सामाजिक–आर्थिक बदलाव की एक नई दिशा तय की है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को मजबूती देने वाली महतारी वंदन योजना के अंतर्गत राज्य की लगभग 70 लाख विवाहित महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है। अब तक 22 किश्तों में 14,306 करोड़ 33 लाख रुपये की राशि सीधे उनके बैंक खातों में अंतरित की जा चुकी है। महिला कल्याण के लिए 5,500 करोड़ रुपये का प्रावधान इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि राज्य की विकास यात्रा के केंद्र में महिलाएँ हैं। महिलाओं को संपत्ति में अधिकार दिलाने के उद्देश्य से रजिस्ट्री शुल्क में 1 प्रतिशत की छूट, 368 महतारी सदनों का निर्माण, मितानिनों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय का ऑनलाइन भुगतान जैसे निर्णयों ने सुशासन और पारदर्शिता को और सुदृढ़ किया है। स्व–सहायता समूहों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए 42,878 महिला समूहों को 12,946.65 लाख रुपये का रियायती ऋण प्रदान किया गया है। वहीं, बस्तर सहित छह जिलों में रेडी–टू–ईट का कार्य महिला स्व–सहायता समूहों को सौंपा गया है। महिला आजीविका के नए अवसर सृजित करने के लिए मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण योजना, नवाबिहान योजना, डिजिटल सखी, दीदी ई–रिक्शा योजना, सिलाई मशीन सहायता, तथा मिनीमाता महतारी जतन योजना जैसी पहलें लागू की गई हैं। कन्याओं के विवाह में सहयोग हेतु मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत सहायता राशि का बड़ा हिस्सा सीधे कन्या के बैंक खाते में जमा किया जा रहा है, जिससे पारदर्शिता और आत्मनिर्भरता दोनों को बल मिला है। महिला सुरक्षा के क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ ने ऐतिहासिक पहल की है। वन–स्टॉप सेंटर, 181 महिला हेल्पलाइन और डायल 112 के एकीकृत संचालन ने संकट की घड़ी में त्वरित और प्रभावी सहायता सुनिश्चित की है। सुखद सहारा योजना के अंतर्गत 2 लाख 18 हजार से अधिक विधवा एवं परित्यक्ता महिलाओं को प्रतिमाह आर्थिक सहायता दी जा रही है। किशोरियों के स्वास्थ्य और शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए शुचिता योजना, साइकिल वितरण योजना, तथा नवा रायपुर में यूनिटी मॉल का निर्माण महिला स्व–सहायता समूहों के उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जशपुर जिले की आदिवासी महिलाओं द्वारा संचालित 'जशप्योर' ब्रांड को वैश्विक पहचान दिलाने के प्रयास भी महिलाओं के लिए नए अवसरों के द्वार खोल रहे हैं। महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के साथ–साथ उनके लिए सुरक्षित, सम्मानजनक और सशक्त वातावरण तैयार करना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि महतारी वंदन योजना, नवाबिहान, लखपति दीदी, शुचिता और महतारी सदन जैसी पहलें महिलाओं के समग्र विकास का मजबूत आधार तैयार कर रही हैं। वर्ष 2025–26 में महिला एवं बाल विकास विभाग को 8,245 करोड़ रुपये का बजट आवंटित कर राज्य सरकार ने स्पष्ट संदेश दिया है कि महिला कल्याण, सुरक्षा और सशक्तिकरण उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ आज महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में नई दिशा, नई उम्मीद और नए परिवर्तन का प्रतीक बनकर उभर रहा है।

वैश्विक संकट के बीच क्या खुद को संभाल पाएगी भारत की अर्थव्यवस्था? जानें रिपोर्ट का दावा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के चालू खाता घाटे (सीएडी) को लेकर राहत की खबर है। क्रिसिल की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वैश्विक आर्थिक चुनौतियों और वस्तु निर्यात पर दबाव के बावजूद भारत का ब्।क वित्त वर्ष 2026 में बहुत ज्यादा नहीं बढ़ेगा। इसके पीछे कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, सेवाओं के निर्यात में अधिशेष और स्थिर रेमिटेंस को प्रमुख वजह बताया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 में भारत का ब्।क औसतन जीडीपी के 1 फीसदी के आसपास रह सकता है, जबकि वित्त वर्ष 2025 में यह 0.6 फीसदी था। हालांकि अमेरिका की टैरिफ नीति और वैश्विक आर्थिक सुस्ती के कारण वस्तु निर्यात पर दबाव रहने की संभावना है, लेकिन आयात पक्ष और अदृश्य आय पक्ष से मिलने वाला सहारा घाटे को सीमित रखेगा। क्या होता है चालू खाता घाटा ? जब किसी देश का आयात (सामान, सेवाएं और ट्रांसफर) उसके निर्यात से ज्यादा हो जाता है, तो उसे चालू खाता घाटा कहा जाता है। इसका मतलब होता है कि देश से बाहर शुद्ध रूप से धन का प्रवाह हो रहा है।

क्रिसिल का कहना है कि कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, सेवाओं के निर्यात में लगातार सरप्लस और विदेशों से आने वाली मजबूत रेमिटेंस सीएडी को काबू में रखने में मदद करेंगी। इसी का असर है कि वित्त वर्ष 2026 की दूसरी तिमाही में सीएडी घटकर जीडीपी के 1.3 फीसदी पर आ गया, जो पिछले साल की इसी तिमाही में 2.2 फीसदी था। कच्चे तेल से बड़ी राहत कमोडिटी मोर्चे पर रिपोर्ट का अनुमान है कि कैलेंडर वर्ष 2026 में कच्चे तेल की औसत कीमत 60–65 डॉलर प्रति बैरल रह सकती है, जबकि 2025 में यह 65–70 डॉलर प्रति बैरल रहने का अनुमान था। नवंबर में ब्रेंट क्रूड की औसत कीमत 63.6 डॉलर प्रति बैरल रही, जो महीने–दर–महीने 1.6 फीसदी और साल–दर–साल 14.5 फीसदी की गिरावट है। इससे भारत का आयात बिल घटने और बाहरी स्थिरता मजबूत होने की उम्मीद है।

वैभव सूर्यवंशी ने 36 गेंद में लगाया शतक, यूसुफ पठान का रिकॉर्ड तोड़ा, रिकॉर्ड 15 छक्के जड़े

एजेंसी, रांची। वैभव सूर्यवंशी भारत की सीनियर टीम के दरवाजे पर जोरदार दस्तक दे रहे हैं। महज 14 साल के वैभव सूर्यवंशी ने विजय हजारे ट्रॉफी में ऐसा धमाका किया कि विराट कोहली और रोहित शर्मा की घरेलू क्रिकेट में वापसी के बीच भी सारी सुर्खियां उन्हीं के नाम रहीं। बिहार की ओर से खेलते हुए वैभव ने अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ सिर्फ 36 गेंदों में तूफानी शतक जड़ दिया, जो लिस्ट–ए क्रिकेट में किसी भारतीय बल्लेबाज का दूसरा सबसे तेज शतक है। एशिया कप की निराशा के बाद जोरदार जवाब कुछ दिन पहले ही अंडर–19 एशिया कप के फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ वैभव सूर्यवंशी का दिन खास नहीं रहा था। बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए वह 10 गेंदों पर 26 रन बनाकर आउट हो गए थे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **धर्मेन्द्र सिंह** द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा एमआईजी-47, सेक्टर-ई, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक-अंजू सिंह (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) Email-lkojunction@gmail.com. RNI NO.-UPHIN/2015/64743